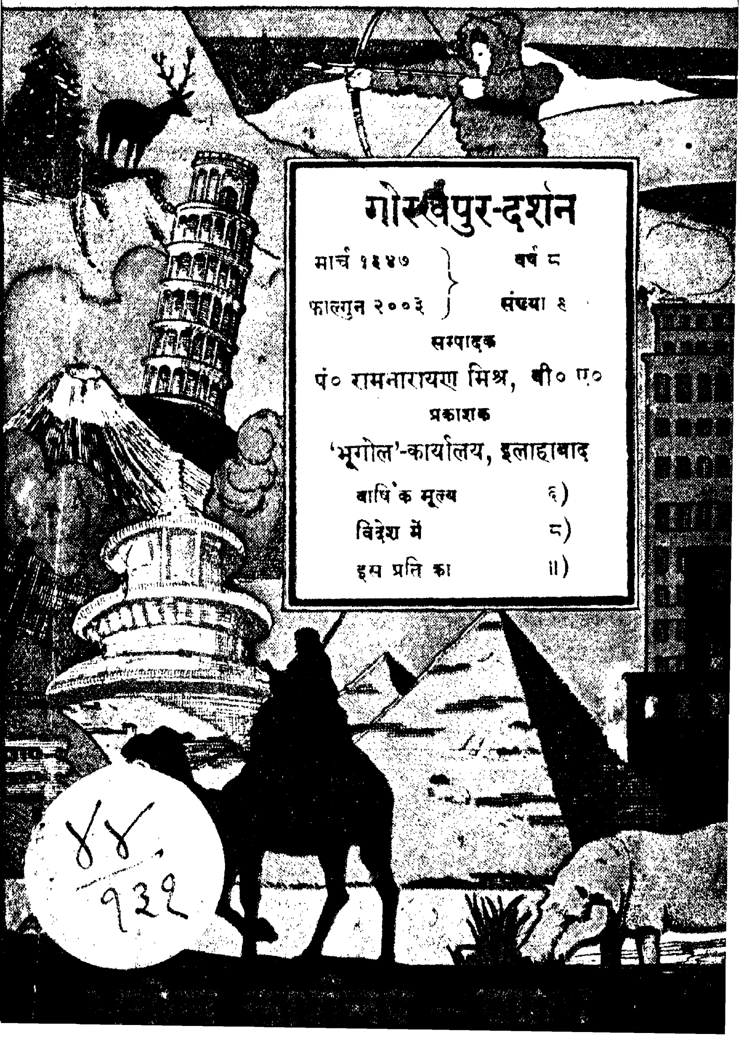
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—८७



गोरखपुर-दर्शन

मार्च १९४७ | फाल्गुन २००३
वर्ष ८ | संख्या १

सम्पादक
पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक
'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य ६)
विदेश में ८)
इस प्रति का ॥)

विषय-सूची

स्थिति

स्थिति, सीमा और विस्तार

गोरखपुर का जिला संयुक्त प्रान्त के धुर उत्तरी-पूर्वी सिरे पर स्थित है। यह समूचा जिला घाघरा नदी के उत्तर में है। घाघरा नदी गोरखपुर को आजमगढ़ और बलिया जिलों से अलग करती है। इसके पश्चिम में बस्ती जिला है। प्रायः दो मील तक घाघरा के उस पार फैजाबाद का जिला है। पूर्व में बिहार के सारन-चम्पारन जिले हैं। पूर्व की ओर कुछ दूर तक छोटी बड़ी गंडक प्राकृतिक सीमा बनाती है। शेष पूर्वी सीमा कृत्रिम है। उत्तर की ओर नैपाल का स्वाधीन राज्य है। इस ओर कुछ भूमि तटस्थ छोड़ दी गई है। इसी के बीच में सीमा निश्चित करने के लिये पक्के खम्भे बना दिये गये हैं। गोरखपुर का जिला २६°५' और २७°२९' उत्तरी अक्षांशों और ८३°४' और ८४°२६' पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। घाघरा नदी के इधर उधर हो जाने से गोरखपुर जिले का क्षेत्रफल घटता बढ़ता रहता है। इसका औसत क्षेत्रफल ४५१५ वर्गमील है। क्षेत्रफल में गोरखपुर संयुक्तप्रान्त का सबसे अधिक बड़ा जिला है।

भूरचना

गोरखपुर जिले से हिमालय की बाहरी श्रेणियां अधिक दूर नहीं हैं। इस ओर हिमालय की २७००० फुट ऊँची धवलगिरि चोटी वर्षा ऋतु और शीतकाल में आकाश निर्मल रहने पर उत्तर में प्राय: गोरखपुर शहर तक दिखाई देती है। हिमालय की बाहरी श्रेणी के दक्षिण में भावर का सूखा प्रदेश है जहां वर्षा-जल भेद्य चट्टानों के नीचे छिप जाता है। यह भावर प्रदेश नैपाल राज्य में है। भावर के दक्षिण में तराई की दस मील चौड़ी पेटी है। यह बहुत नम है। लेकिन मलेरिया फैलने के कारण यहां खेती अधिक नहीं होती है। यह गोरखपुर जिले की महाराज गंज तहसील के उत्तरी सिरे पर पाई जाती है। तराई के दक्षिण में बन की पेटी है। बन के बिखरे हुये प्रदेश जिले के प्राय: मध्य भाग तक पाये जाते हैं। बनों से यहां वर्षा अधिक होती है। सब कहीं हरा भरा रहता है। कुओं में पानी पास ही निकल आता है।

खुला हुआ मैदान प्राय: समतल है। इसका क्रमश: ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। उत्तर-पश्चिम में समुद्र-तल से भूमि की ऊँचाई ३५० फुट है। दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर भूमि केवल ३०५ फुट ऊँची रह गई है। कहीं कहीं रेतीले टीले हैं। रेतीले टीलों की एक श्रेणी महाराज गंज तहसील के हाटा गांव के पास से आरम्भ होकर देउरिया तक चली गई है। सम्भव है यहां पुराने समय में गंडक या किसी दूसरी बड़ी नदी का मार्ग रहा हो। इसके पड़ोस में झीलों की एक पंक्ति फैली हुई है। कुआं खोदने पर निचले भाग में यहां छोटे छोटे

कंकड़ की तह मिलती है। इसी प्रकार के रेतीले टीलों की पंक्ति पडरौना और कसिया के बीच में मिलती है। यही जिले का सबसे (३८६ फुट) ऊँचा भाग है। इनके अतिरिक्त नदियों के पड़ोस में जिले का नीचा कछारी मैदान है। कछार के ऊपर ऊँचा मैदान या बांगर है।

जिले के पूर्वी भाग में भाट प्रदेश है। यह बड़ी गंडक की लाई हुई कांप से बना है। इसमें चूना अधिक है। इस मिट्टी में नमी अधिक समय तक नमी रहती है। इससे बिना सिंचाई के ही यहां फसल उग आती है। लेकिन इस मिट्टी से कच्ची दीवारें नहीं बनाई जा सकतीं इसी से इस ओर के गांवों में घर छप्परों से छाये जाते हैं इनकी दीवारें पतली लकड़ियों से बनाई जाती हैं। इस जिले में एक बिशेषता यह है कि यहां ऊसर कहीं नहीं पाया जाता है।

नदियाँ

बड़ी गंडक जिले के उत्तरी-पूर्वी भाग की प्रसिद्ध नदी है। यह नैपाल में हिमालय की हिमाच्छादित श्रेणी से निकलती है। त्रिवेणी के पास (जो जिले की सीमा से १० मील दूर है) यह पहाड़ी नद कन्दराओं को छोड़कर मैदान में प्रवेश करती है। इसे नारायणी भी कहते हैं। नैपाल में इसे शालिग्रामी कहते हैं। यह दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है और इस जिले को चम्पारन जिले से प्रथक करती है। पडरौना

तहसील के बन के कुछ गांव इसके बायें किनारे पर स्थित हैं। इसके आगे यह बिहार में प्रवेश करती है और पटना के पास गंगा में मिल जाती है। पहले कुछ दूर गोरखपुर जिले की सीमा के पास आ जाती है। बीच वाले भाग में गंडक की सोता नाम की एक शाखा सीमा बनाती है। गंडक बड़ी नदी है। गरमी की ऋतु में भी इसमें अधिक जल रहता है। जिले के जिस स्थान को यह प्रथम बार छूती है वहां इसका जल बड़ा ठंडा और निर्मल रहता है। यहां इसकी धारा भी बड़ी तेज है। इसके तली में छोटे छोटे पत्थर बिछे हैं। पानी गहरा होने से गंडक में बड़ी बड़ी नावें चल सकती हैं। लेकिन इसके कुछ भागों में भंवर हैं जिससे नावें संकट में पड़ जाती हैं। छोटी नावें त्रिवेणी सिकन्दरा के समीप तक पहुँच जाती हैं। वर्षा ऋतु में गंडक में अचानक भयानक बाढ़ आ जाती है। इससे नैपाल का बिशाल बन प्रदेश और गोरखपुर जिले की सीमा के पास का बहुत सा भाग जलमग्न हो जाता है। इसकी बाढ़ का पानी चन्दन और रोहिन नदियों में पहुँचता है। दोमाखंड के पास इसकी बाढ़ का कुछ पानी छोटी गंडक में भी पहुँच जाता है। पहले बाढ़ का पानी बनरी नदी में आता है जो पडरौना के पास बंसी नदी में मिल जाती है। बंसी नदी बड़ी गंडक में मिलती हैं। इस प्रकार बड़ी गंडक की बाढ़ का पानी फिर उसी (बड़ी गंडक) में पहुँच जाता है। बाढ़ का कुछ पानी खनुआ नदी में पहुँचता है। जो रामभार ताल में होती हुई कसिया के समीप वाले स्थानों को जलमग्न कर देती है। लेकिन बाढ़ कुछ

ही समय तक रहती है। कभी कभी खरीफ की फसल कट जाने के बाद बाढ़ आती है। इससे इसकी बाढ़ से अधिक हानि नहीं होती है। बगहा के पास बड़ी गंडक के ऊपर रेल का पुल बना है। गोला, पिपरा घाट, साहबगंज आदि स्थानों पर इसे पार करने के लिये नावें रहती हैं। बड़ी गंडक में कई छोटी छोटी नदियां मिलती हैं। बंसी नदी वास्तव में गंडक की छांड़ (छोड़ी हुई धारा) है। कुछ दूर तक यह जिले की सीमा बनाती है। साहबगंज के पास यह सोता में मिल जाती है। झरई इस समय घाघरा में मिलती है। पहले यह गंडक की ही छांड़ (छोड़ी हुई धारा) थी। झरई गरमी की ऋतु में प्रायः सूख जाती थी। वर्षा ऋतु में यहां मलेरिया ज्वर बहुत फैलता है। १९०८ में इसकी तली गहरी कर दी गई।

छोटी गंडक भी बड़ी गंडक की पुरानी धारा है। यह नैपाल के बाघ बन के पास आरम्भ होती है। सितलापुर के पास यह ब्रिटिश जिले में प्रवेश करती है। इसके एक मील आगे इसकी दो धारायें हो जाती हैं। एक धारा उत्तर-पश्चिम की ओर बहकर चन्दन में मिल जाती है। दूसरी धार छोटी गंडक नाम से दक्षिण की ओर बहती है। हेतिमपुर तक यह पडरौना की पश्चिमी सीमा बनाती है। शाहजहांपुर और सलेमपुर परगनों में बहती हुई सिमरिया के पास जिले के उत्तरी-पूर्वी कोने पर यह घाघरा में मिल जाती है। वर्षा ऋतु को छोड़कर शेष ऋतुओं में यह प्रायः सूखी पड़ी रहती है। खेकरा, हिरनी, घटनी, मौन आदि नाले इसमें मिलते हैं।

राप्ती गोरखपुर जिले की प्रधान नदी है। पहले इसे इरा-

वती कहते थे। इससे बिगड़कर इसका नाम रावती पड़ा। रावती से बिगड़ कर इसका नाग राप्ती पड़ गया। यह नैपाल में हिमालय की बाहरी श्रेणी से निकलती है। बहराइच गोंडा और बस्ती जिलों में बहती हुई मगलहा गांव के पास यह गोरखपुर ज़िले में प्रवेश करती है। इसके आगे कुछ मील तक ज़िले की सीमा बनाने के बाद ज़िले के भीतर बहती है। यहां इसे धमेला कहते हैं। राप्ती का मार्ग बड़ा टेढ़ा है। गोरखपुर शहर के पास होकर बहती हुई बरहज के समीप यह घाघरा में मिल जाती है। बाढ़ के बाद राप्ती उपजाऊ कांप छोड़ देती है। इसकी छोड़ी हुई बालू में भी कुछ वर्षो के बाद फसलें होने लगती हैं। पहले इसमें १०० टन बोझ वाली नावें चला करती थीं। इसके ऊपर अन्न और लकड़ी ढोने का काम बहुत होता था रेलवे के खुल जाने से नदी का व्यापार नष्ट हो गया। राप्ती के ऊपर भाऊपार घाट और बर्ड घाट में पीपों का पुल बन जाता है। शेष स्थानों में राप्ती को पार करने के लिये नावें चला करती हैं। राप्ती में कई नदियां मिलती हैं। घूंघी बायें किनारे पर मिलती है। घूंघी नदी नैपाल तराई की बाहरी पहाड़ियों से निकलती है। यह दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है और कई मील तक नैपाल राज्य और गोरखपुर जिले के बीच में सीमा बनाती है। इसी बीच में तराई की डंडा और डूंड़ी दो छोटी नदियां इसमें मिलती हैं। इसके आगे यह दक्षिण की ओर मुड़ती है और कुछ दूर तक बस्ती जिले को गोरखपुर जिले से पृथक करती है। ब्रिजमनगंज इसी के किनारे स्थित है। आगे चलकर यह दो धाराओं में बँट जाती

है। यह दोनों धारायें रिगौली के पास धमेला में मिल जाती है। इस पोह और एक दो बन प्रदेश की बहुत छोटी नदियां मिल जाती हैं। नैपाल में इसे तिनान कहते हैं। वहां वर्षा के अन्त में इसके आर पार बांध बना लिया जाता है और इसका जल सिंचाई के काम आता है। इसकी तली गहरी और रेतीली है। इसका जल निर्मल है। वर्षा ऋतु में उमड़ कर यह बड़ी नदी हो जाती है। इसके अन्त में यह सिकुड़ जाती है और इसमें पांज हो जाती है। धमेला राप्ती की पुरानी धारा है। इसमें बस्ती जिले की तराई से आनेवाली कुहरा और दूसरी छोटी छोटी नदियां मिल जाती हैं। गोरखपुर जिले में १० मील बहने के बाद कमैंनी घाट के पास यह राप्ती में फिर मिल जाती है। इसके किनारे ऊंचे हैं। यह नाव चलाने के लिये बड़ी अच्छी है। वर्षा ऋतु में इसमें २० फुट ऊंची बाढ़ आती है। इस बाढ़ से इसके समीप की भूमि डूब जाती है। पहले इसके बायें किनारे से कुछ दूर बसे हुये उस्का और धानी के बीच में इस नदी के ऊपर बहुत सा सामान ढोया जाता था। रेल के खुल जाने से अब अनाज बैल गाड़ियों पर लाद कर ब्रिजमन गंज स्टेशन को पहुँचा दिया जाता है।

राप्ती की दूसरी सहायक नदी रोहिन है जो नैपाल से आकर बिनायकपुर परगने में प्रवेश करती है। हवेली परगने को पार करने के बाद यह गोरखपुर शहर के पास राप्ती मिल जाती है। इसके किनारे आरम्भ में सपाट है। लेकिन जिले में अधिक आगे बढ़ने पर यह मैदान की दूसरी नदियों के समान हो जाती है। छोटे छोटे पत्थर पीछे छूट जाते हैं।

डोमिनगढ़ के पास इस पर रेल का पुल बना है। सुखई के पास रोहिन में नेपाल से आनेवाली बघेला नदी मिलती है। कुछ छोटे नालों का पानी लेकर पियास या झरई नदी भी रोहिन में मिलती है। झरलहिया के पास इस में बलिया नदी मिलती है। चिलुआ नदी चिलुआ ताल को पार करके मनी-राम के पास रोहिन में मिलती हैं। दाहिने किनारे पर रोहिन में केवल कलन नदी मिलती है। रोहिन बघेला और पियास नदियां सिंचाई के काम आती हैं। सींचने के लिये नैपाल में इनमें बांध बना लिये जाते हैं। इस जिले में भी कहीं कहीं इनके पानी से सिंचाई होने लगी है।

तूरा एक छोटी नदी है। यह रामगढ़ बन में होती हुई दक्षिण की ओर बहती है। मंझा गांव के पास गर्रोया गौरा में मिल जाती है। गौरा में रामगढ़ और नरही ताल की बाढ़ का पानी आता है। कुछ दूर तक यह राप्ती की समानान्तर बहती है। सिमरौना नाला के मार्ग से राप्ती की बाढ़ का पानी गौरा में पहुँच जाता है। अधिक दक्षिण में गौरा में फरेंद नदी मिलती है। फरेंद के पड़ोस में जंगली जामुन बहुत हैं। इसी से इसका यह नाम पड़ा। इसका मार्ग बड़ा टेढ़ा है। समोगर के पास यह राप्ती में मिल जाती है। निचले मार्ग में इसे प्रायः कटना नाम से पुकारते हैं। मदनपुर के पास इसमें मझना नदी मिलती है। अमी और तरौना नदियां राप्ती के दाहिने किनारे पर मिलती हैं। अमी नदी बस्ती जिले के रसूलपुर, परगने से निकलती है। ४४ मील बहने के बाद रामपुर के पास यह गोरखपुर जिले में प्रवेश करती है।

दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हुई सोहगौरा के पास यह राप्ती में मिल जाती है। यह मन्द वाहिनी छोटी नदी है। केवल वर्षा ऋतु में यह उमड़कर अमियर ताल भर देती है। बाढ़ में बहुत सी भूमि डूब जाती है। बांगर के कुछ भाग द्वीप के रूप में बच जाते हैं। एक द्वीप कलेसर से नेवास तक और दूसरा हर्दिया से मलौन तक आज़मगढ़ सड़क के दोनों ओर बन जाता है। राप्ती का कछार बाढ़ में प्रतिवर्ष डूब जाता है। बांगर को बचाने के लिये बांध बना दिये गये हैं। प्रबल बाढ़ में बांध भी टूट जाते हैं। एक बांध १६ मील लम्बा है और पीपों के पुल से कुइन बाज़ार तक राप्ती के पूर्वी किनारे पर चला गया है। यह बांध तीन फुट तक ऊंचा और ४ फुट चौड़ा है। लहसारीं नाले के पास यह ३० फुट ऊंचा है।

तरैना नदी उनौला परगने के दक्षिण में निकलती है और धुरिया पार होकर दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। भेड़ी ताल में पहुँचकर यह इसके पूर्वी सिरे से फिर निकलती है। पूर्व की ओर बहकर यह राप्ती में मिल जाती है। गरमी की ऋतु में इसमें प्रबल बाढ़ आती है। १८७१ की बाढ़ में इसने आज़मगढ़ को जाने वाली सड़क का पुल तोड़ दिया। इस नदी में नाव चलाने के लिये वर्ष भर पानी नहीं रहता है। लेकिन सिंचाई के लिये यह बड़ी उपयोगी है।

घाघरा को सरयू और देहवा भी कहते हैं। इसमें चौका या सारदा और कौरियाला का पानी आता है। दोनों नदियां बाराबंकी जिले के बहराम घाट के पास मिल जाती हैं। चौका और सारदा दोनों ही हिमालय के हिमागारों से निकलती हैं। सारदा

अल्मोड़ा से और चौका नैपाल से आती है। घाघरा भारतवर्ष की विशाल नदियों में से एक है। इसकी तली चौड़ी और रेतीली है। इस रेतीली पेटी में घाघरा अपना मार्ग बदलती रहती है। घाघरा की गहरी धारा जिले की सीमा बनाती है। इसके दूसरी ओर आजमगढ़ और बलिया के जिले हैं। बलिया के सामने वाला किनारा तुरतीपुर के पड़ोस में कड़ा और कंकरीला है। लेकिन आजमगढ़ जिले के समीप रेतीली तली को काटकर घाघरा प्रायः प्रतिवर्ष अपना मार्ग बदल देती है। इससे गोरखपुर और आजमगढ़ जिलों के क्षेत्रफल में भी परिवर्तन होता रहता है। मझदीप के पास घाघरा गोरखपुर जिले को प्रथमबार छूती है। गोला, बढ़लगंज, राजपुर और भागलपुर के पास बहती हुई पूर्व में यह सारन जिले में पहुँचती है। रेलवे के खुल जाने से नावों का व्यापार नष्ट हो गया। इसी से नगरों का भी ह्रास हो गया। लेकिन इस नदी के समीप बसे हुये बरहज नगर में रेल के आजाने से इसकी उत्तरोत्तर उन्नति होती गई। घाघरा के निकारे ऊंचे और सपाट हैं। फिर भी भयानक बाढ़ में यह नदी उँमड़कर अपने पड़ोस की भूमि को डुबा देती है। बाढ़ के बाद स्थान स्थान पर इसकी धारा के बीच में द्वीप निकल आते हैं। बायाँ किनारा रेतीला है। अतः इस ओर बाढ़ दूर तक पहुँचती है। भागलपुर के पास तुर्तीपुर में घाघरा के ऊपर रेल का पुल बना है। कई स्थानों पर घाघरा को पार करने के लिये (नाव के) घाट हैं। आजमगढ़ को जानेवाली प्रान्तीय सड़क के मार्ग का घाट अधिक प्रसिद्ध है।

गोरखपुर-दर्शन

गोरखपुर जिले में भागलपुर और आजमगढ़ जिले में दोहरी घाट है। राप्ती और छोटी गंडक के अतिरिक्त कुवना या कुआनों नदी इस जिले में घाघरा में मिलती है। कुवना बहराइच जिले से निकल कर गोंडा और बस्ती जिलों को पार करती हुई कुछ दूर तक वस्ती और गोरखपुर जिलों के बीच में सीमा बनाती है। धुरिया पार परगने को पार करके शाहपुर के पास वह घाघरा में मिल जाती है। यहां इसकी तली गहरी और रेतीली है। कभी कभी घाघरा की बाढ़ का पानी इसमें आ जाता है।

गोरखपुर में ऐसी झीलों की संख्या बहुत है जिनमें साल भर पानी रहता है। अधिकतर झीलें नदियों के छोड़े हुये पुराने मार्ग में स्थित है। सिरों पर कांप के भर जाने से लम्बी अर्द्ध चन्द्राकार झीलें बन गई। इनके अतिरिक्त कुछ क्षणिक झील और दलदल हैं जो वर्षा ऋतु में पानी से भर जाते हैं और शेष ऋतुओं में सूख जाते हैं। गोरखपुर शहर के पास कसिया को जानेवाली सड़क के दक्षिण में रामगढ़ ताल है। यह गोरों के कब्रिस्तान से लोहे के पुल तक चला गया है। पहले इसमें नरकुल बहुत होते थे। इनसे मलेरिया फैलता था। इसलिये म्यूनिसिपेलिटी ने इन्हें कटवाकर एक मार्ग से ताल के पानी को राप्ती में पहुँचाने का प्रयत्न किया। पर इसका फल उल्टा हुआ। वर्षा ऋतु में राप्ती की प्रबल बाढ़ का जल ताल में आने लगा। अतः बांध बनाकर लहसारी के पास नाले का मुंह बन्दकर दिया गया। रामगढ़ ताल में मछलियां बहुत हैं। जिले के पास वाले मल्लाह मछलियां पकड़ा करते हैं।

कुछ मील दक्षिण-पूर्व की ओर राप्ती के कछार में अधिक छोटा नरहै ताल है। गर्रा नदी इसे रामगढ़ ताल से मिलाती है। ग्रीष्म ऋतु में इसका अधिकतर भाग सूख जाता है। उस समय गाय भैंस इसकी घास चरा करती हैं।

डोमिनगढ़ और कमैंनी झीलें गोरखपुर शहर के पश्चिम में स्थित हैं। राप्ती में मिलने से पूर्व रोहिन नदी ने अपनी बाढ़ से इन झीलों को बनाया है। इन दोनों के बीच में कुछ ऊंची भूमि है। लेकिन वर्षा की प्रबल बाढ़ में दोनो मिलकर एक हो जाते हैं। रेलवे के बांध से उत्तर की ओर सात मील तक पानी फैल जाता है। वर्षा के अन्त में अधिकांश पानी राप्ती में बह जाता है और ताल छोटे रह जाते हैं।

इसी प्रकार की छोटी छोटी झीलें राप्ती के दाहिने किनारे पर स्थित हैं। गोरखपुर शहरसे ६ मील दक्षिण की ओर आज़मगढ़ को जाने वाली सड़क के पास ही नन्दौर ताल स्थित है। यह ढाई मील लम्बा और आध मील चौड़ा है। इसका जल बड़ा निर्मल है। इसमें मछलियां बहुत हैं। वर्षा ऋतु में इसका जल बहुत बढ़ जाता है। लेकिन इसमें वर्ष भर पानी बना रहता है। इससे कुछ मील दक्षिण की ओर अमियर ताल है। यह अमी नदी की बाढ़ के जल से बना है। यह कई मील लम्बी घाटी को घेरे हुये हैं। इसके पूर्व में बिजरा ताल है। वर्षा के अन्त में इसमें रबी की बढ़िया फसल होती है।

चिल्लू पार परगने में घाघरा और राप्ती नदियों के बीच में भेंड़ी ताल है। यह तरैना नदी की बाढ़ से बना है जो इस ताल

में होकर जाती है। वर्षा ऋतु में यह पांच मील लम्बा हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु में सूख कर यह बहुत छोटा रह जाता है। कांप के भर जाने से इसका विस्तार लगातार कम होता जा रहा है। इसके पूर्वी सिरे से बचा हुआ पानी राप्ती नदी में पहुँचता है। कभी कभी प्रबल बाढ़ में यह अपने समीप के प्रदेश को घाघरा के किनारे तक डुबा देती है। इसमें मछलियां बहुत हैं। इसके घोंघे चूना बनाने के लिये इकट्ठे किये जाते हैं।

चिलुआ ताल हवेली परगने की चिलुआ नदी के फैलने से बना है। यह बहुत लम्बा और तंग है। मनीराम के पास यह सिकुड़ कर नदी का रूप धारण कर लेता है। इसका जल रोहिन में मिल जाता है। पहले इसके संकुचित भाग में पक्का पुल बना था। प्रबल बाढ़ ने पुल तोड़ डाला इन्हीं महरावों के ऊपर रेल का पुल बनाया गया।

पुल के पश्चिम में इसे महेश्वर ताल नाम से पुकारते हैं। इसके बीच में एक छोटा द्वीप है। कहते हैं पुराने समय में यहां एक राजा का महल बना हुआ था। यहां मछलियां बहुत हैं। इसके पड़ोस में मल्लाह बहुत रहते हैं। रोहिन के पश्चिम में रोहिन और राप्ती के द्वाब में कई छोटे छोटे ताल हैं।

पूर्वी भाग में रामाभर ताल प्रधान है। यह कसिया से देउरिया को जाने वाली पक्की सड़क के पश्चिम में स्थित है। वर्षा काल में यह एक मील लम्बा और चौथाई मील चौड़ा हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु में सूख कर यह आधा रह जाता है। इसमें मछलियां बहुत हैं। इसके पानी से सिंचाई भी होती है। इस भाग के दूसरे ताल अधिक छोटे हैं।

बन को छोड़कर गोरखपुर जिले की २५ फीसदी (एक चौथाई) भूमि जलमग्न, उसर अथवा अन्य कारण से खेती के काम नहीं आती है। इसमें कुछ भूमि एक दम पानी से घिरी है। कुछ भूमि में रेल, सड़क और घर बने हैं। बहुत ही थोड़ी भूमि उजाड़ है जहां खेती नहीं हो सकती है। कुछ भूमि में बाग और चरागाह हैं। गोरखपुर जिले का बन बड़ा उपयोगी है। पहले बन अधिक भूमि घेरे हुये था। खेती के बढ़ने से बन का क्षेत्रफल घट गया है। १८३० ईस्वी से नाम मात्र का लगान लेकर बन का पट्टा दिया जाने लगा। इससे कुछ ही समय में बहुत सा बन साफ कर लिया गया। १८५० में यह प्रथा बन्द कर दी गई और बन सरकारी रक्षित बन घोषित कर दिया गया। जब्ती की भूमि भी इसमें मिला दी गई। इसी से जिले में अलग अलग टुकड़ों में बिखरा हुआ बन प्रदेश पाया जाता है। इस जिले में समस्त बन १७३ वर्ग मील है। यह १४ भागों में बंटा हुआ है। इस प्रदेश की भूमि बलुई दुमट है। इस पर सड़ी हुई बनस्पति की पतली तह बिछी हुई हैं। दलदलों में चिकनी मिट्टी है। कहीं कहीं कंकड़ है। कहीं एकदम बालू है। दोमाखंड बन का वर्षा जल बहकर बड़ी गंडक में जाता है। उत्तरी और मध्यवर्ती भाग में रोहिन और पियास का प्रवाह प्रदेश है। नदियों के पड़ोस में प्रायः दलदल है। वर्षा ऋतु में नदियों के पास वाले बन प्रदेश पानी में डूब जाते हैं। इनमें जंगली जामुन और घास है। बन का सबसे अधिक मूल्यवान पेड़ साल है। यह निचली भूमि में

१० से लेकर ४० फुट की ऊंचाई तक उगता है। जिले का १०३ वर्ग मील बन साल के वृक्षों से घिरा है। अधिक बड़े पेड़ कम हैं। जहां वर्षा जल ठीक ठीक नहीं बह पाता है वहां साल के पेड़ नहीं होते हैं। अधिक कड़ी चिकनी मिट्टी में भी साल नहीं होता है। घास वाले भागों में असेना के पेड़ होते हैं। नदियों के समीप जंगली जामुन के अतिरिक्त हल्दू और खैर के वृक्ष भी होते हैं। गंडक से दूसरे सिरे पर डोमाखंड में ६०० एकड़ भूमि में केवल खैर (कत्था) के ही पेड़ हैं। बन में महुआ, शीशम सेमल और आंवला के भी पेड़ पाये जाते हैं। सरकारी बन के अतिरिक्त महराजगंज और पडरौना तहसील में कुछ बन अलग अलग व्यक्तियों के हाथ में भी है। इसमें भी साल और दूसरे उपयोगी वृक्ष पाये जाते हैं। पहले बन में जंगली पशु बहुत थे। चीता गंडक के समीप वाले बन और डोमाखंड में पाया जाता है। कुछ भागों में तेंदुआ बहुत हैं। भेड़िया कम हैं। भालू भी मिलते हैं। घाघरा के पड़ोस वाले दियरा (जङ्गल) में जङ्गली सुअर, चीतल और नील गाय बहुत हैं। नदियों में घड़ियाल पाये जाते हैं।



जलवायु

पश्चिमी जिलों की अपेक्षा गोरखपुर जिले की जलवायु अधिक समशीतोष्ण है। बन और पर्वत पास होने से यहां ग्रीष्म ऋतु में गरमी अधिक विकराल नहीं होने पाती है। परम तापक्रम छाया में १०५ अंश से अधिक ऊंचा नहीं नहीं होता है। ११० अंश तक कभी नहीं पहुँचा है। प्रायः १०० अंश रहता है। ग्रीष्म के आरम्भ में पर्वत की ओर से तूफान आ जाया करते हैं। यहां लू भी दो तीन सप्ताह से अधिक नहीं चलती है। धूल भरी आंधी भी बहुत कम आती है। हवायें प्रायः सभी ऋतुओं में पूर्व की ओर से आती हैं। शीतकाल बड़ा मनोहर होता है। लेकिन दिसम्बर या जनवरी का तापक्रम ५० अंश से कम नहीं होने पाता है। वर्षा ऋतु में तराई के पास वाली महाराजगंज और पडरौना तहसीलों में मलेरिया बहुत फैलता है।

गोरखपुर जिले में पर्वतीय प्रदेश को छोड़ कर मैदान के जिले में सबसे अधिक वर्षा होती है। औसत से यहां ५२ इंच से अधिक वर्षा होती है। उत्तर के बन प्रदेश में सबसे अधिक वर्षा होती है। महराजगंज में प्रायः ६० इंच वर्षा होती है। देवरिया में ४६ इंच वर्षा होती है। किसी किसी वर्ष (१८९९) में जिले में औसत से ७३ इंच वर्षा हुई है। उस वर्ष महाराजगंज में ८२ इंच वर्षा हुई। किसी वर्ष यहां ४० इंच से कम वर्षा हुई।

गोरखपुर-दर्शन

कृषि

खेती के लिये यहां प्राय. सभी प्राकृतिक सुविधायें हैं। फिर भी इस जिले में कृषि अधिक उन्नत दशा में नहीं है। यहां की भूमि बड़ी उपजाऊ है। ऊसर भूमि का प्राय: अभाव है। प्रचुर वर्षा होने से सिंचाई की अधिक आवश्यकता नहीं पड़ती है। पर सिंचाई की पूरी सुविधा है। कुओं में ५ गज की गहराई पर पानी निकल आता है। झीलों, तालाबों और नदियों से भी सिंचाई होती है। फिर भी जिले के बड़े भाग (जैसे कछार) में केवल एक फसल उगाई जाती है। बाढ़ आने पर इस फसल का भी निश्चय नहीं रहता है। उत्तर और पूर्व में भी दूसरी फसल उगाने का विशेष प्रयत्न नहीं किया गया। केवल उपजाऊ भाट (पडरौना तहसील और देउरिया के कुछ भाग में भाट भूमि है) प्रदेश में दो फसलें होती हैं। दूसरी फसल रबी की होती है। बन को छोड़कर जिले की ७५ फीसदी भूमि में खेती होती है। नदियों के समीप नीचा कछार है। इनसे आगे ऊपर ऊँचा बांगर है। बांगर में बलुआ (भूड़) मिट्टी है। कहीं कहीं मटियार, चिकनी मिट्टी है। अधिकतर भाग में दोरस या दुमट मिट्टी पाई जाती है। नैपाल की सीमा के पास तराई है। यह बांगर का ही अंग है। यहां अधिकतर चिकनी मिट्टी पाई जाती है। तराई की औसत चौड़ाई १० मील है। इसमें कुला (छोटी नहरों) से सिंचाई होती है जो छोटी नदियों से बांध बनाकर निकाली गई हैं। यहां पानी की अधिकता होने से धान बहुत होता है। रबी की फसल कम होती है। कुछ अल्सी अवश्य होती है।

बांगर के उत्तरी भाग में प्रचुर वर्षा होने से धान बहुत होता है। शीघ्र उगने वाले धान ऊंची भूमि में और देर से तैयार होने वाले धान नीची भूमि में उगाये जाते हैं। उत्तरी बांगर और तराई में कोई स्पष्ट विभाजक सीमा नहीं है। बांगर के दक्षिणी भाग में चना, जौ, गेहूँ आदि रबी की फसल प्रधान है। बलुई भूमि में अच्छी फसलें नहीं होती है। राप्ती और रोहिन के दोनों किनारों पर बलुआ भूमि है। यहां धान मकई, ईख और अरहर को छोड़कर खरीफ की अन्य फसलें अच्छी नहीं होती हैं। लेकिन यहां रबी की फसल अच्छी होती है।

भाट प्रदेश के उत्तरी भाग में भी प्रधान फसल धान है। हलकी धूसी मिट्टी में पूर्वी सीमा के पास मकई और ज्वार बाजरा होता है। बड़ी गंडक के धाब कछारी कांप में कछार की अपेक्षा बाढ़ से कम हानि होती है। धाब में धान और ईख की खेती होती है। भाट में रबी की फसल अधिक अच्छी नहीं होती है। इस जिले में रबी की अपेक्षा खरीफ की फसल अधिक महत्व की है। जिले की एक तिहाई भूमि इतनी अच्छी (दो फसली) है कि इसमें वर्ष में दो फसलें होती हैं। खरीफ की फसल में सब कहीं प्रधान स्थान धान का है। भदई धान भादों महीने में और अगहनी अगहन महीने में तैयार होता है। अगहनी धान अधिक मूल्यवान होता है। इसे उगाने में अधिक परिश्रम करना पड़ता है। कोदों निर्धन लोगों का प्रधान भोजन है। यह जिले के सभी भागों में उगाया जाता है।

खरीफ की फसल की पन्द्रह फीसदी भूमि में कोदों उगाया जाता है। मकई की खेती बढ़ रही है। खरीफ की लगभग ८ फीसदी भूमि में मकई उगाई जाती है। ईख जिले की मूल्यवान फसल है। लगभग ७ फीसदी भूमि में ईख होती है। अरहर भी महत्व की फसल है। अकेली अरहर केवल ४ फीसदी भूमि में उगाई जाती है। यह प्रायः ज्वार कोदों और तिल के साथ मिलाकर बोई जाती है। पहले इस जिले में नील बहुत होता था। कृत्रिम सस्ते नील ने इसकी खेती को कम दिया है। कुछ भूमि में मडुआ, ज्वार और बाजरा की फसलें होती हैं। रबी की फसल में गेहूँ सब से अधिक मूल्यवान है। रबी की फसल की १२ फीसदी भूमि में गेहूँ उगाया जाता है। कुछ गेहूँ जौ के साथ मिलाकर बोया जाता है। इसे गोह-जई कहते हैं। १४ फीसदी भूमि में जौ बोया जाता है। पडरौना और देउरिया तहसीलों में इससे भी अधिक गेहूँ होता है। जौ के बाद दूसरा स्थान मटर का है। ८ फीसदी भूमि में चना बोया जाता है कुछ चना गेहूँ और जौ के साथ मिलाकर बोया जाता है। जिले के उत्तरी भाग में तोर, सरसों आदि तिलहन बहुत होते हैं। कुछ भाग में पोस्ता बोया जाता है। इससे अफीम निकलती है जो गाजीपुर के सरकारी कारखाने को भेज दी जाती है। मसूर आदि कुछ अन्य फसलें बहुत थोड़ी मात्रा में होती हैं।

कारबार

गोरखपुर कारबारी जिला नहीं है। फैजाबाद और आजमगढ़ की भांति यहां बढ़िया कपड़ा नहीं बुना जाता है। जुलाहे कुछ मोटा कपड़ा गाढ़ा बुनते हैं। टाट भी बुना जाता है। गोरखपुर शहर में सूत और ऊन को मिलाकर धुस्सा बुना जाता है। कुछ ठठेरे पीतल के बर्तन बनाते हैं। पडरौना में फूल के बर्तन अच्छे बनते हैं। मिट्टी के साधारण बर्तन भी बनाये जाते हैं। कुछ स्थानों में टोकरियां बनाई जाती है। सांभर, नील गाय आदि की खाल को साल की छाल से कमाने का काम होता है। इस पर रेशम की कढ़ाई होती है। काढ़ने से पहले यह मखमल के समान मुलायम कर लिया जाता है। देउरिया तहसील के लार गांव में साबुन बनाने का काम होता है। यह खारी मिट्टी से बनाया जाता है। प्रति वर्ष यहां २००० मन से अधिक साबुन बनता है और नैपाल को भेज दिया जाता है। जिले के कई नगरों में गुड़ और शक्कर बनाने का काम होता है। यहां से ६ लाख मन गुड़ और चीनी बाहर भेजी जाती है। गोरखपुर जिले में नैपाल से प्रतिवर्ष प्रायः २ लाख मन चावल आता है। तिलहन, घी और चमड़ा भी आता है। कुछ तांबा भी आ जाता है। यहां से विलायती कपड़ा, नमक, चीनी आदि नैपाल को जाता है।

जन-संख्या

गोरखपुर जिले की जन-संख्या लगभग ३० लाख है। केवल पांच फीसदी मनुष्य कस्बों में रहते हैं। शेष छोटे छोटे गांवों में रहते हैं। जिन नगरों की जन-संख्या ५००० से अधिक है वे केवल बारह हैं। गोरखपुर, बरहज, पडरौना, सलेमपुर-मझौली, बढ़लगंज, बांसगांव, पैना और बसगवां प्रधान हैं। इस जिले में प्रायः ५० फीसदी हिन्दू और १० फीसदी मुसलमान हैं। अन्य धर्मावलम्बियों की संख्या कुछ ही सौ है। हिन्दुओं में सब से अधिक संख्या चमारों की है। इनके पश्चात् अहीर ब्राह्मण, कुरमी, कोरी, राजपूत, केवट (मल्लाह) कहार, बनिया, कुम्हार आदि हैं। कुछ मगहियां डोम लोगों में (सम्भवतः निर्धनता के कारण) अधिकतर चोरी करने का स्वभाव पड़ गया था।

थारू लोगों की संख्या प्रायः २ हज़ार है। यह अधिकतर विनायकपुर और तिलपुर परगनों में रहते हैं। यह कमायूं की तराई में रहने वाले थारू लोगों के समान हैं। यहां बड़े नियम से रहते हैं। इन्हें मलेरिया के प्रदेश में भी ज्वर नहीं सताता है। यह तराई के प्रदेश में धान उगाते हैं और बड़े परिश्रम से खेती करते हैं। यह अधिकतर जंगल में रहते हैं और दूसरे लोगों से कम मिलते हैं। यह यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनते हैं और अपने को राजपूत बतलाते हैं। इनके अतिरिक्त यहां कुछ मूल निवासी रहते हैं।

मुसलमान पडरौना और महराजगंज तहसीलों में अधिक रहते हैं। अधिकतर जुलाहे हैं कुछ शेख और पठान हैं।

हाल में कुछ लोग ईसाई भी हो गये हैं।

संक्षिप्त इतिहास

गोरखपुर जिले में कसिया, सोहनाग आदि कई प्राचीन स्थान है। फिर भी इसके प्राचीन इतिहास का ठीक ठीक पता नहीं चलता है। यह निस्सन्देह कौशल राज्य का अंग था। राप्ती और घाघरा के संगम के पास श्री रामचन्द्र जी ने विश्वामित्र जी से विद्या प्राप्त की थी। उसके वंशज कौशिकों को घाघरा के उत्तर की भूमि दान में दी थी। अयोध्या के नष्ट हो जाने पर वहां के राजा ने रुद्रपुर में राजधानी बसाने का प्रयत्न किया था। चेरू, भार और थारू लोगों ने उसे नष्ट कर दिया। चाहे कसिया प्राचीन कुशी नगर था अथवा वेथ द्वीप था इस नगर का भगवान बुद्ध के जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध है। ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दों में यहां अशोक का साम्राज्य था। मौर्य साम्राज्य के नष्ट हो जाने पर ईसा से १८४ वर्ष पूर्व सुंगा वंश राज्य करने लगा। इस वंश के नष्ट हो जाने पर सौ वर्ष तक यहां अराजकता छाई रही। लिच्छावी वंश के राजाओं ने गोरखपुर जिले में शासन किया। चोथी शताब्दी के आरम्भ में चन्द्रगुप्त ने इनसे छीन कर इसे गुप्त साम्राज्य में मिला लिया। कहांव के शिलालेख से प्रगट होता है कि ४६० ईस्वी में यहां स्कन्द गुप्त का शासन था। चीनी यात्री फाहियान (५८४ ई० में) और ह्वानसांग (६३५ ई० में) कसिया में आये थे। इन दोनों के समय में जिले का बहुत सा भाग बन हो गया था। मठ और स्तूप खँडहर बन गये थे। यहां कोई बड़े नगर न थे। भागलपुर के दसवीं शताब्दी के स्तम्भ के शिलालेख में एक सूर्यवंशी राजा का उल्लेख है जो अयोध्या के राजवंश का ही था। मझौली के

पास ग्यारहवीं शताब्दी का एक काला पत्थर मिला। इसमें संस्कृत में लिखा है कि कुलाचूड़ि वंश के राजा यहां आठ पीढ़ियों से शासन करते थे। यह मध्यप्रान्त के चेदि और रत्नपुर से आये थे। बलिया जिले में हल्दी के हयोवंशी राजा इन्हीं के बंशज हैं।

आरम्भ में मुसलमानों ने गोरखपुर जिले को बिहार में सम्मिलित किया था अथवा अवध में मिला रक्खा था इसका ठीक ठीक पता नहीं चलना है। कुछ भी हो दिल्ली के मुसलमानों का राज्य यहां नाम मात्र का था। घाघरा को पार करके गोरखपुर के दुर्गम बन में मुसलमानों की सेनायें बहुत कम आईं। ११९३ ईस्वी में कुतुबुद्दीन ऐबक ने अवध और बिहार को जीत लिया तो इस जिले पर मुलसमानी विजय का बहुत कम प्रभाव पड़ा। १२०० में बख्तियार खिल्जी ने विहार पर अधिकार कर लिया। १२२५ में अल्तमश ने विहार जीता। १२२६ में उसके बड़े बेटे नसरुद्दीन ने अवध के भागों को हराया। लेकिन इन घटनाओं का गोरखपुर जिले पर कोई विशेष प्रभाव न पड़ा। आक्रमणकारी सुगम मार्गो का अनुसरण करते थे। गंगा को पार करके बहुत दूर भीतर की ओर वे नहीं जाते थे। बंगाल में मुसलमानों का राज्य जम जाने पर भी गोरखपुर जिले में राजपूतों की शक्ति बढ़ती रही। जब दिल्ली के सुल्तान उत्तरी मार्ग से बंगाल को जाते थे तो वे अयोध्या से नाव पर पूर्व की ओर जाया करते थे। गयासुद्दीन तुगलक और फीरोज़ इसी मार्ग से गये थे। १३५३ ई० में फीरोज़ गोरखपुर के पास ठहरा था। उसने समीप के सरदारों को इकट्ठा करके दरबार

किया था। उदयसिंह मुकद्दम ने फीरोज को दो हाथी भेंट किये। गोरखपुर राय ने कई वर्षों का शेष लगान दिया। जौनपुर के शर्की सुल्तान गोरखपुर पर अपना प्रभुत्व न जमा सके। उन्होंने राजपूतों से बराबरी का मित्र भाव दिखलाया। जौनपुर के पतन के बाद अफगानों का यहां कोई विशेष प्रभाव न रहा। शेरशाह ने केवल कभी कभी यहां के राजपूतां से कर वसूल किया।

बारहवीं सदी से अकबर के समय तक गोरखपुर जिले का इतिहास राजपूतों के भिन्न-भिन्न वंशों का इतिहास है। बिसेन पुराने निवासी थे। राठोर राजपूत गोरखपुर के पास बस गये। कहते हैं मान सरोवर और कौलाश ताल इन्हीं ने बनवाये थे। डोमकार लोगों ने डोम और भार वंशों का दमन किया। इनकी राजधानी डोमिनगढ़ थी। डोमिनगढ़ रोहिन नदी के बीच में एक द्वीप पर बसा था। इसी समय दक्षिण पूर्व की ओर से भुइंहार आये और हरपुर में बस गये। इनके बाद कौशिक और सरनेत आये। चौदहवीं शताब्दी में मुकुन्दसिंह नामी एक चौहान ने बुटवल राजवंश की नींव डाली। उन्होंने थारू लोगों की लड़कियों से ब्याह किया। बंसो के सरनेतों से उनकी बराबर लड़ाई होती रही। उनके और सतासी के बीच में बन की पेटी थी। सतासी राज्य को लाहोर से आये हुये चन्द्र-सेन नाम के एक सरनेत राजपूत ने कुवना के किनारे बसाया था। पूर्व की ओर पड्रौना का राज्य था। पड्रौना का कुरमी राज-वंश कड़ा (इलाहाबाद) से १६५० ई० में आये हुये भोपाल राय ने स्थापित किया था। उसने मझौली के राजा के यहां

नौकरी कर ली थी। उसे वंसी चिरगोरा टप्पा में पांच गांव मिल गये थे। भोपालराय ने इन गांवों में खेती आरम्भ कर दी। उसके वंशजों ने जागीर बढ़ाने का कोई अवसर न छोड़ा। नाथूराय ने चन्देलों से कई गांव ले लिये। १६८१ में वह औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हुआ। वहां उसे पडरौना तहसील में ३३ गांव और दिये गये। मझौली के राजा ने इस राज्य को दृढ़ करने में सहायता दी। राय ईश्वरी प्रताप राय ने १,१५,००० रुपये में पडरौना तहसील में जंगल मोल लिया। इससे उसे इतना लाभ हुआ कि उसने अपना सब कर्ज़ चुका दिया। गदर में आधा राज्य ज़ब्त कर लिया गया। शेष आधा राज्य किसी प्रकार बना रहा। इस समय इस राज्य में ३६४ गांव हैं जिनकी मालगुजारी ८६३६५ रुपये हैं। इस राज्य के कुछ गांव बलिया आज़मगढ़ और चम्पारन ज़िलों में स्थित हैं।)

अकबर के समय में (१५५९ में) मुगल सेनाओं ने अवध और जौनपुर फिर से जीत लिया। अकबर ने राजपूत सरदारों को मिलाया और अफ़गानों को दबाया। टोडरमल और दूसरे मुगल सेनापति विद्रोह को दबाने के लिये यहां आये। पहले धुरिया पार के राजा ने मुगलों का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया। कुछ विरोध के बाद मझौली के राजा ने भी मुगलों का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया। सतासी का राजा लड़ा। पर अन्त में राज्य छोड़कर उसे भागना पड़ा। गोरखपुर शहर में मुगल सेना रहने लगी। फिर भी राजपूतों और अफगानों का कुछ समय तक विद्रोह होता रहा। अकबर के समय में अवध प्रान्त के

अन्तर्गत गोरखपुर में पांच सरकार शामिल थी। १६२५ में गोरखपुर के मुगल सेनापति ने कुछ अत्याचार किया। इसका फल यह हुआ कि सतासी और बंसी के राजाओं ने एक साथ गोरखपुर और मघार पर चढ़ाई की। उन्होंने मुगलों को गोरखपुर से भगा दिया। राजपूत फिर एक बार स्वाधीन हो गये। उन्होंने दिल्ली को कर भेजना बन्द कर दिया। औरंगजेब के समय में १७०० ई० में राजपूतों के दबाने के लिये अयोध्या से एक बड़ी मुगल सेना भेजी गई। गोरखपुर के चकलेदार ने बंसी के राजा को मघार से भगा दिया। फिर मुगल सेना ने सतासी के राजा रुद्रसिंह को गोरखपुर से निकाल दिया। मुगल सूबेदार ने बसन्त सिंह के पुराने किले को फिर से बनवाया। उसने गोरखपुर से अयोध्या को सड़क निकाली और (बस्ती जिले में) राप्ती के दाहिने किनारे पर खलीलाबाद नगर बसाया। इसके बाद यहां मुसलमानों का राज्य काफी समय तक जम गया। बहादुर शाह गोरखपुर के जंगलों में शिकार के लिये आया था। उसने यहां जामा मस्जिद बनवाई। उसके सम्मानार्थ कुछ समय तक शहर का नाम मुअज्जमाबाद रख दिया गया। फिर भी वास्तविक शक्ति राजा के हाथ में बनी रही। यहां के राजा भूमि और उपाधि वितरण करते थे। शाही स्वीकृति की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी। १७२१ में बड़ा परिवर्तन हुआ। इस वर्ष अवध का सूबा सादात खां को मिल गया। अवध में ही गोरखपुर शामिल था। उसने यहां के राजाओं की शक्ति कम करने का पूरा प्रयत्न किया। दक्षिणी भाग में वह सफल हो गया। लेकिन जिले

के उत्तरी भाग में उसका अधिकार नाम मात्र का था। १७७२ में बुटवल राजवंश के राजा तिलक सेन ने बंजारों की सहायता से तिलपुर परगने में विद्रोह का झंडा उठाया। राजा ने जिले का बड़ा भाग लूटा और उजाड़ा। फैजाबाद से यहां सेना भेजी गई। इसका कोई फल न हुआ। फौज के लौटते ही तिलक सेन ने फिर छापा मारना आरम्भ कर दिया। केवल मझौली के राजा के राज्य में शान्ति थी। जिले के शेष भागों में अराजकता छा गई। १७५० में एक बड़ी सेना फिर भेजी गई। सेनापति कासिम खां ने पहले विद्रोही मुसलमानों को दबाया। उसने मुसलमानों के उस किले को गिरवा दिया जो उन्होंने डोमिनगढ़ के स्थान पर हाल में बनवाया था। इसके बाद वह उत्तर की ओर बढ़ा। उसने तिलक सेन के बेटे को हराकर बुटवल पर चढ़ाई की। लड़ाई बीस वर्ष तक चली। इसके अन्त में समझौता हो गया। तिलक सेन ने जो भाग जीत लिये थे वे बुटवल राज्य में रहे। मुसलमान अफसर हटा लिये गये। नाम मात्र का लगान नियत किया गया। दक्षिणी भाग में भी सेना की सहायता से ही कर इकट्ठा किया जा सकता था। शुजाउद्दौला के समय तक यही हाल रहा। १७६४ में शुजाउद्दौला बक्सर की लड़ाई में हार गया। इसके बाद गोरखपुर जिले में कर वसूल करने और शान्ति रखने का काम नवाब की ओर से मेजर हने को मिला। इसने बड़ा अत्याचार किया। किसानों से इतना अधिक कर वसूल किया गया कि असहाय और दीन किसान खेत छोड़कर इधर उधर भागने लगे। जहां हरे भरे खेत थे वहां जंगल हो गया। इससे जिले में असन्तोष

और अराजकता भी बढ़ गई। इसी समय बंजारे भी लूट मार करने लगे। वे राजाओं को आपस में लड़ाने लगे। जो राजा उन्हें अधिक धन देता उसी का वे पक्ष लेते थे। वे अपने आपको नवाब वजीर के गुमाश्ता बताते थे और चकलादार, नाज़िम, आमिल आदि की उपाधि धारण कर लेते थे। लेकिन उनका एक मात्र उद्देश्य यह था कि कम से कम समय में वे अधिक से अधिक धन लूट सकें। अलग अलग एक एक राजा इनका सामना करने में असमर्थ था। यदि सब राजा मिल जाते तो वे बंजारों की शक्ति को निस्सन्देह नष्ट कर डालते। पर उनमें गृह कलह फैली हुई थी। १७८८ में सतासी के राजा ने बुटवल पर चढ़ाई की। लेकिन उसके वंश वालों ने १७९० में में बजारों को बस्ती जिले से निकाल दिया। हने साहब (मेजर हने) और वंजारों के अत्याचार से धुरिया पार के कौशिकों का बुरा हाल हो गया था। केवल मझौली के राजा की दशा अच्छी थी। उसने सिधुआ जोहना बंजारों के लिये छोड़ दिया था। आगे चलकर पडरौना और तमखुई के राज्यों की स्थापना में सहायता दी थी। इस प्रकार पडरौना और देउरिया की दशा पश्चिमी भागों से अधिक अच्छी थी। यहां तालुकेदारों और राजाओं के मिल जाने से न बंजारों की लूट मार थी और न अवध के नवाबी अफसरों का अत्याचार था। १८०१ की सन्धि में गोरखपुर और दूसरे पड़ोस के प्रदेश अवध के नवाब ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिये। कम्पनी के अफ-सरों ने धीरे धीरे राजाओं को दबा दिया। इसी समय नैपाल राज्य ने पहले तराई और फिर तिलपुर और विनायकपुर के

परगने मिला लिये। १८०५ में गुरुखों ने लगान वसूल करने के लिये अपने अफसर बुटवल को भेजे। बुटवल का अभागा राजा कम्पनी का कर देने में असमर्थ था। वह कैद कर लिया। जब वह कैद से छूटा तो गुरखा लोग उसे पकड़ कर काठमांडू ले गये वहाँ वह मार डाला गया। कम्पिनी ने उसके परिवार को पेन्शन देकर उसका राज्य मिला लिया। १८०६ में गुरखा लोग फिर लौटे। जिस प्रदेश के सम्बन्ध में झगड़ा चल रहा था उसका तिहाई भाग उन्होंने अपने राज्य में मिला लिया। इस वर्ष सर जार्ज बार्लो गुरखों को बस्ती के उत्तर में शिवराज का प्रदेश इस शर्त पर देने के लिये राजी हो गया कि बुटवल खाली कर दिया जावे। गुरखों ने बुटबल खाली न किया पर वे प्रथा बन्दोबस्त का लगान देने को राजी हो गये। इसके बाद लार्ड मिंटों आया। गुरखों ने बुटबल को पूरी तरह से नैपाल राज्य में मिला लिया। १८१० और १८११ में बुटबल की सीमा को पार करके गुरखों ने पाली के कुछ गांव ले लिये। १८१२ में लार्ड मिंटों ने अपना विरोध प्रगट किया। गुरखों ने इस प्रदेश पर अपना अधिकार सिद्ध किया। इस पर सीमा निर्धारित करने के लिये एक कमीशन नियुक्त किया गया। कम्पिनी के प्रतिनिधि मेजर ब्रैडशा ने कहा कि गुरखों का शिवराज या बुटवल पर कोई अधिकार नहीं होना चाहिये। १८१४ में लार्ड मिंटों ने इसी मांग को दुहराया और सैनिक तयारी की। गोरखपुर के कलक्टर को आज्ञा दी गई कि यदि २५ दिन के भीतर कोई उत्तर न मिले तो सेना भेजकर उक्त प्रदेश ले ले। कलक्टर ने बिना किसी विरोध

के सेना भेज कर शिवराज और बुटबल पर अधिकार कर लिया और अप्रैल महीने में चितवा, बुसौरिया और सौरा में पुलिस चौकियां स्थापित कर दी। मई महीने में गुरखों ने पुलिस चौकियों पर आक्रमण किया और उन्हें छीन लिया। पुलिस के सिपाही भागकर बंसीं में पहुँचे। छः महीने चुप रहने के बाद पहली नवम्बर को कम्पिनी ने युद्ध घोषित किया। कमायूं और बिहार की ओर से नैपाल में जो तीन सेना भेजी गई उसका इस जिले से सम्बन्ध नहीं है। चौथी सेना गोरखपुर से बढ़ी। इसमें १४ तोपें और ४००० सिपाही थे। इस सेना को लेकर जनरल वुड बिना किसी विरोध के १८१५ कीं तीसरी जनवरी को बुटबल पहुँच गया। बुटबल के पास वाले दर्रे में गुरखा सेनापति वज़ीर सिंह ने पहले ही किले बन्दी कर ली थी। बुटबल राजा के एक ब्राह्मण नौकर ने जंगल में अंग्रेजी सेना को मार्ग दिखलाया। समीप पहुँचने पर गुरखों ने गोली चलाना आरम्भ कर दिया। प्रधान सेना के आजाने पर गुरखे पहरेदार पहाड़ियों में चले गये। अंग्रेजों के २४ सिपाही मारे गये। अंग्रेजी सेना ने आगे बढ़ने का साहस न किया और यहीं से पीछे लौट आई। नैपाल से गोरखपुर को आने वाले प्रधान मार्ग की देख भाल करने के लिये अंग्रेजी सेनापति ने लोटान में खाईं खुदवा दी। सेनापति निचलौल को चला गया। उस ओर गुरखे लोग प्रतिदिन अंग्रेजी राज्य के गांवों को लूटते और जलाते थे। जनवरी, फर्वरी और मार्च में सहायता के लिये नई सेना लगातार आती रही। फिर भी सेनापति को नैपाल के पर्वतीय प्रदेश में घुसने का साहस न हुआ। जिन गांवों को गुरखों

ने खाली कर दिया था उनको जलाकर ही उसने सन्तोष कर लिया। अंग्रेजी सेनापति गुरखों की सेना को अपनी सेना से अधिक प्रबल समझता था। अतः वह बचाव करता रहा और खुल्लम खुल्ला लड़ाई से बचता रहा। १८१५ के अप्रैल मास में लड़ने के लिये आज्ञा मिली। उसने बुटबल पर कुछ गोला-बारी की। फिर वह तराई को नष्ट करके गोरखपुर को लौट आया। इसी बीच में गढ़वालियों की सहायता से जनरल आक्टरलोनी ने देहरादून और कमायूं को नैपालियों से जीत लिया। पर गुरखे अंग्रेजों की शर्तों को मानने और तराई छोड़ने के लिये तैयार न थे। कर्नल निकल्स बुटबल और पल्पा पर चढ़ाई करने के लिये गोरखपुर को भेजा गया। सन्धि की वार्ता अक्तूबर तक चलती रही। २८ नवम्बर को सिगौली में समझौता हुआ। १८१६ के फर्वरी महीने में ऐसा जान पड़ा कि गुरखा लोग लड़ाई जारी रखना चाहते हैं। इस बार जनरल आक्टरलोनी ने बिहार के मार्ग से नैपाल में प्रवेश किया। मार्च में सन्धि हो गई। बुटबल को छोड़कर सरजू और गंडक के बीच की तराई अंग्रेजों को मिल गई। पर सीमा सीधी रक्खी गई यह नैपाल की पहाड़ियों के समानान्तर चलती थी। शिवराज और पल्पा को छोड़कर यह नैपाल की पहाड़ियों से अलग थी। अतः कुछ तराई नैपाल राज्य को मिल गई। इस लड़ाई और अंग्रेजी सेनापतियों की शिथिलता से गोरखपुर जिले में अराजकता छा गई। नैपाल युद्ध के अन्त होने पर ही डाकुओं का दमन हो सका।

१८५७ के मई मास में गदर का समाचार पाते ही यहां के कलक्टर और जज ने तरह तरह की तैयारी की। जेल और

पुलिस के लिये राजभक्त पहरेदार चुने गये। योरुपीय प्लांटरों और राजभक्त जमींदारों को भी उपर्युक्त सूचनायें दी गई। फालतू खज़ाना आजमगढ़ भेज दिया गया। मई के अन्त में लूट मार बढ़ने लगी। पैना के ज़मींदार घाघरा में चलने वाली नावों को लूटने लगे। नरहरपुर के राज्य में बढ़लगंज की पुलिस को भगा दिया। उसने सड़क पर काम करने वाले ५० कैदियों को मुक्त कर दिया और घाट को छीन कर आज़मगढ़ के मार्ग में बाधा डाल दी। पांच जून को आज़मगढ़ के विद्रोह का समाचार आया। केप्टेन स्टील ने अपने सिपाहियों से परेड कराई और उनको व्याख्यान दिया। दूसरे दिन इन्हीं सिपाहियों ने आज़मगढ़ जाने से इन्कार कर दिया और खज़ाना लूटने की इच्छा प्रगट की। ७ जून को कुछ कैदियों ने भागने का प्रयत्न किया। लेकिन स्वामिभक्त पहरेदारों ने उन्हें रोक दिया। ८ जून को खज़ाना लूटने वाले सिपाहियों को वेनार्ड महाशय ने रोक दिया। काठमांडू के रेज़ीडेंट मेजर रेम्से ने पल्पा से २०० सिपाही भेजे जिले में मार्शल्ला घोषित की गई। फिर भी उत्तरी और पश्चिमी भागों में अराजकता छा गई। सतासो और नरहपुर के राजा दूसरे भागों के विद्रोहियों से मिलने का प्रयत्न कर रहे थे। १७ और १९ जून को गोंडा और दूसरे स्थानों से भगाकर आये हुये योरुपीय गोरखपुर पहुँचे। बंसी के राजा ने इन गोरों और गोरखपुर की मेमों (गोरी स्त्रियों) को आजमगढ़ पहुँचा दिया। यहां से वे गाजीपुर चले गये। ३० जून को पल्पा से गुरखा सिपाही आ गये। जुलाई भर गोरखपुर में कुछ शान्ति रही। शहर के बाहर फिर भी अराजकता छाई हुई

थी। २६ जुलाई को सिगौली के विद्रोह का समाचार आया। कर्नल राटन २००० गुरखा सिपाही लेकर काठमांडू से आ रहा था। कुछ विद्रोही सिपाहियों से हथियार रखा लिये गये। शेष सिगौली से दक्षिण की ओर सलेमपुर चले आये। यहां उन्होंने अफीम के एजेन्ट का बंगला नष्ट कर दिया। लेकिन वे खजाना न पा सके। खजाना गोरखपुर पहुँचा दिया गया। गुरखा सिपाही आजमगढ़ और फिर वहां से इलाहाबाद भेज दिये गये। गोरखपुर में विद्रोही प्रबल हो गये। जिले का प्रबन्ध मझौली, सतासी बंसी, गोपालपुर और तमखुई के राजाओं को सौंप दिया गया। १३ अगस्त को गोरे अफसर गोरखपुर खाली कर के खजाना लेकर गुरखों के साथ चल दिये। घाघरा को पार करके २२ अगस्त को वे आजमगढ़ पहुँच गये। मुहम्मद हसन के नेतृत्व में विद्रोहियोंने इनका पीछा किया। आजमगढ़ की सड़क पर घाघरा से १० मील उत्तर की ओर गगहा में गुरखा सिपाहियों पर आक्रमण किया गया। इसमें २०० विद्रोही मारे गये। इस बीच में राजाओं की समिति का राज्य ढीला पड़ गया। मुहम्मद हसन ने लौट कर जेल के कैदी मुक्त कर दिये। बर्ड महाशय को अपनी जान लेकर गोरखपुर से भागना पड़ा। अभी तक यह राजाओं के प्रबन्ध का निरीक्षण करते थे। गोपालपुर के राजा ने बचे हुये खजाने को अपने यहां रखने का वचन दिया था। लेकिन बर्ड साहब ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। विद्रोहियों ने गोरखपुर की सिविल लाइन में गोरों के बंगले जला डाले। विद्रोहियों ने बर्ड साहब को पकड़ने वालों के लिये पुरस्कार घोषित किया। लेकिन वह किसी प्रकार ८२ मील की यात्रा

करके बेतिया पहुँच गया। विद्रोहियों ने इस प्रकार प्रबन्ध आरम्भ किया मानो उनका स्थायी अधिकार हो गया हो। सरकारी कागजात सुरक्षित रक्खे गये कुछ पुराने सरकारी नौकर भी रख लिये। बंसी और गोपालपुर के राजाओं ने विद्रोहियों का विरोध किया। तमकुही और मझौली के राजाओं ने भी सरकारी नौकरों की रक्षा की। पर विद्रोहियों का राज्य अधिक समय तक न रहा। २२ दिसम्बर को जङ्गबहादुर की गुरखा सेना बेतिया पहुँची। २६ दिसम्बर को छोटी गंडक के किनारे सोमनपुर में पड़े हुये विद्रोहियों पर आक्रमण हुआ। वे हरा दिये गये। कई विद्रोही गांवों को भी दंड दिया गया। गोरखपुर शहर भी विद्रोहियों ने खाली कर दिया। कुछ विद्रोही भागते समय राप्ती में डूब गये। कुछ सेना घाघरा के मार्ग से नावों पर भेजी गई। कुछ ही समय में समस्त जिले में फिर अंग्रेजी राज्य हो गया। सतासी और बढ़ियापार के राज्य जब्त कर लिये गये। बिल्लूपार के राजा की जायदाद भी जब्त कर ली गई। शाहपुर के मुसलमान राजा का धुरियापार परगने में यही हाल हुआ। तिघरा, पांडेपार, डुमरी के बाबुओं की जायदाद भी जब्त कर ली गई। निचलौल का राजा रन्दुल सेन बुटवल राजवंश का अन्तिम राजा था। उसकी पेन्शन छीन ली गई। गोपालपुर के राजा को शाहपुर जागीर कुछ भाग और दूसरी जायदाद पुरस्कार में मिली। गोरखपुर के मियां साहब ने गोरों की जान बचाई थी। उन्हें और दूसरे सहायकों को भी इनाम मिले। मझौली के राजा का कर्ज माफ कर दिया गया। तराई का प्रदेश नैपाल

राज्य को लौटा दिया गया। १८६५ में बस्ती जिला अलग हो गया।

प्रसिद्ध नगर—बैकुंठपुर छोटी गंडक के दाहिने किनारे पर नुनखार रेलवे स्टेशनसे २ मील उत्तरकी ओर देउरियासे ८ मील और गोरखपुर से ४० मील दूर है। यहां प्राइमरी स्कूल और डाकखाना है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। अगहन के महीने में यहां धनुष यज्ञ का मेला लगता है। यह जिले का सब से बड़ा मेला है। इसमें प्रायः ५०,००० दर्शक इकट्ठे होते हैं। कपड़े धातु के बर्तन आदि बहुत बिकते हैं।

बांस गांव—इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह गोरखपुर शहर से १४ मील दक्षिण की ओर है। यह अभी नदी की घाटी के ऊपर ऊंची भूमि पर बसा है। पहले यहां चौहानों का राज्य था। फिर सरनेतों ने उन्हें भगा दिया। इस विजय के उपलक्ष में वे अब भी क्वांर के महीने में देवी के पुराने मन्दिर में वे देवी को भेंट चढ़ाते हैं। इसमें मझगवां आदि कई छोटे छोटे गांव शामिल हैं। पुरानी तहसील की इमारतें बरावां में थी। वहां १९०७ से अस्पताल है। नई तहसील और मुन्सफी यहां से १०० गज दक्षिण की ओर है। पूर्व की ओर इन्पेक्शन बंगला है। इनके अतिरिक्त यहां थाना, डाकखाना और जिले भर में सब से बड़ा मिडिल स्कूल है। इसी से मिला हुआ ट्रेनिंग स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

बरहज का बड़ा और प्रसिद्ध नगर राप्ती नदी के बायें किनारे पर घाघरा के संगम से कुछ ही दूर है। कहते हैं पहले संगम

बरहज से ४ मील पश्चिम की ओर था। १८८३ में वह बरहज से २ मील पश्चिम की ओर रह गया। यह गोरखपुर से ४१ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। कसिया और देउरिया से आने वाली पक्की सड़कें यहीं समाप्त होती है। सलेमपुर से आने वाली शाखा रेलवे लाइन का यह एक स्टेशन है। पहले यहां नावों के द्वारा बहुत व्यापार होता था। रेल के खुलने पर यह व्यापार कम हो गया। फिर भी यहां बहुत सी नावें लकड़ी अनाज आदि ढोने में लगी रहती हैं। इंडिया जनरल स्टीम नेवीगेशन कम्पिनी के स्टीमर यहां ठहरा करते हैं। कहते हैं बरहन या बरहजी नाम का एक ब्राह्मण मुसलमान हो गया था। उसी की स्मृति में इसका यह नाम पड़ा। उसकी कब्र का दर्शन करने के लिये बहुत लोग आते हैं। कुअँरधीर साही नाम के एक राजपूत ने यहां एक कोट (किला) बनवाया। तब से बरहज तेजी से बढ़ा। मुसलमानों ने इसे नष्ट कर डाला। पुराने कोट के चिन्ह इस समय भी मिलते हैं। आधुनिक बरहज को बसाने का श्रेय मझौली के राजा साहब को है। १८३० में यहां चीनी का कारखाना बना। इस समय बरहज और गौरा में चीनी के कई कारखाने हैं। चीनी के कारबार से बरहज की बड़ी उन्नति हुई। गौरा बरहज का ही भाग है। दोनों की जनसंख्या ११००० से अधिक है। पूर्वी भाग में प्राय: मल्लाह रहते हैं। बाजार प्रतिदिन लगता है। कार्तिक पूर्णिमा को मेला होता है। यहां थाना, डाकखाना, मिडिल स्कूल और राष्ट्रीय पाठशाला है। यहीं मझौली के

राजा साहब की कोठी है। यहां राजा का ही अधिकार है। बढ़लगंज घाघरा के किनारे दोहरी घाट के सामने गोरखपुर से आजमगढ़ को जानेवाली प्रान्तीय सड़क के दोनों ओर बसा है। यह गोरखपुर से ३६ मील दूर है। यहां होकर सिकरीगंज और गोरखपुर से बरहज, लार और छपरा को कच्ची सड़कें गई हैं। बढ़लगंज के पूर्वी भाग को चिल्लू पार कहते हैं। यह चिल्लू नाले के उस पार है। इसी से इसका नाम चिल्लूपार पड़ा। बढ़लगंज में कस्बा, गोला या गल्ले का बाजार और लालगंज शामिल है। लाल साहब चिल्लूपार या नरहरपुर के विद्रोही राजा के भाई थे।

नरहरपुर गांव यहां से १ मील पूर्व की ओर है। गदर के समय तक राजा का राज्य रहा। फिर यह राज्य जब्त कर लिया गया। कुछ भाग गोपालपुर के राजभक्त राजा को पुरस्कार के रूप में दे दिया गया। शेष भाग सीधे अंग्रेजी शासन में आ गया। बुढ़लपुर घाघरा के ऊंचे कड़े कंकरीले किनारे पर स्थित है। इसलिये इसलिये इसके कटने का डर नहीं है। उंचाई पर बसे होने के कारण नगर का वर्षा जल और नालियों का पानी तेजी से नदी में बह जाता है। प्रधान सड़क पर बाजार है जहां पक्की दुकाने बनी है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां थाना, अस्पताल, अफीम का बंगला, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। उत्तर की ओर पड़ाव है। यहां कई पुराने मन्दिर हैं। जलेश्वर नाथ महादेव का मन्दिर अधिक पुराना हैं। कार्तिक, चैत और अषाढ़ में स्नान का मेला लगता है। जेठ में गाजी मियां का मेला लगता है। बढ़ी

का छोटा गांव निचली भूमि पर राप्ती नदी के पास गोरखपुर से १३ मील दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है। यहां राप्ती की बाढ़ प्रायः प्रतिवर्ष आ जाती है। बाढ़ ने गांव के उत्तर की ओर की सड़क को कुछ दूर तक काट दिया। इसी से थाना यहां से गौरी को चला गया। यहां से २ मील उत्तर-पूर्व की ओर गर्रा के बायें किनारे पर स्थित है। यहां समरौना नाला गर्रा को राप्ती से मिलाता है। बढ़ी में डाकखाना और स्कूल है। यहां बाज़ार भी लगता है। बढ़ी से २ मील पूर्व की ओर राजधानी, टोंग्री और उपधौली गांवों में एक प्राचीन नगर और कोट के भग्नावशेष हैं। कहते हैं यहां मौर्य राजवंश का निवास-स्थान था। यह नगर पूर्व-पश्चिम में राप्ती से फरेंद तक चार मील की लम्बाई और एक मील की चौड़ाई में बसा था। राप्ती के किनारे डीह घाट से गर्रा के किनारे तक कई टीले हैं जिन पर ईंटें बिखरी हुई हैं। गर्रा नदी के पूर्व में उपधौलिया डीह सब से बड़ा टीला है। यह एक १ मील लम्बा और १६०० फुट चौड़ा है। इसमें दो स्तूपों के भग्नावशेष हैं। एक बड़ा टीला राजधानी के पास है। कुछ और आगे फरेंद नदी के पास ईटों का एक विशाल घेरा है। यह १९०० फुट लम्बा और १३०० फुट चौड़ा है। इस प्राचीन नगर का ठीक ठीक पता नहीं लगाया गया है। बेलघाट घाघरा के कुम्हरिया घाट के पास गोरखपुर से २६ मील और सिकरीगंज से ६ मील दूर है। पहले यहां घाघरा के किनारे पर घाट था। आजकल यह घाघरा से ३ मील दूर हो गया है। यहां थाना और प्राइमरी स्कूल है।

गोरखपुर-दर्शन

भागलपुर घाघरा के बायें किनारे पर गोरखपुर से ५२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। तुर्तीपुर रेलवे पुल से यह १ मील ऊपर की ओर है। तुर्तीपुर स्टेशन कुछ ही दूर है। यहां डाकघर और प्राइमरी स्कूल है। रेल के खुल जाने से नावों से का व्यापार घट गया। इससे यहां का बाजार भी छोटा हो गया। यह एक पुराना नगर है। नदी के दोनों ओर प्राचीन भग्नावशेष मिलते हैं। गांव से आध मील पूर्व एक खुरदरा भूरा भूरा प्रस्तर-स्तम्भ है। इस पर दसवीं शताब्दी का लेख खुदा है। यह १७ फुट ऊंचा है। कहते हैं अयोध्या के एक सूर्य वंशी राज ने इसे खड़ा करवाया था।

भाऊपार नन्दौर ताल के उत्तर में गोरखपुर से ५ मील दक्षिण की ओर राप्ती नदी और आजमगढ़ सड़क के बीच में स्थित है। राप्ती के ऊपर एक ऊंचे टीले पर पुराने किले के खंडहर हैं। गोरखपुर शहर के बसने के पहले सतासी के राजा यहीं रहते थे। पुराने समय में गांव और किले के चारों ओर घना जंगल था। १७६९ के दुर्भिक्ष में भूखे चीते ने यहां इतने हमले किये कि गांव के लोग डर कर भाग गये। औसत से चीते प्रति वर्ष २५० पशुओं और सात आठ मनुष्यों को मार डालते थे। यहां डाकघर, प्राइमरी स्कूल और बाजार है।

ब्रिजमनगंज को पहले साहबगञ्ज कहते थे। यह नाम ब्रिजमैन साहब की स्मृति में पड़ा जिन्हें लेहरा की जागीर मिली थी। यह गोरखपुर से ४० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां होकर गोरखपुर से उसका और लोटन को सड़क जाती है। बाजार के दक्षिण में रेलवे स्टेशन है। यहां डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और संस्कृत पाठशाला है।

केप्टेनगंज गोरखपुर से पडरौना को जाने वाली सड़क पर गोरखपुर से २८ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। हाटा (तहसील) यहां से १२ मील दक्षिण की ओर है। यहां से एक सड़क पश्चिम की ओर राप्ती के कर्मैनी घाट को गई है। उत्तर की ओर एक सड़क सिस्वा और निचौल को गई है। एक सड़क उत्तर-पूर्व की ओर पडरौना तहसील के नौरंगिया गांव को गई है। अंग्रेजी राज्य के आरम्भ में यहां एक थाना स्थापित किया गया। इससे इस नगर का यह नाम पड़ गया। पूर्व की ओर छोटी गंडक बहती है। पहले नाव के मार्ग से कुछ व्यापार होता था। रेल के आ जाने से यह व्यापार और अधिक बढ़ गया। यहां डाकघर, प्राइमरी स्कूल और बाजार है। गदर में यहां के ज़मींदारों ने विद्रोह किया था। अतः उनकी ज़मीन ज़ब्त कर ली गई।

चौरी चौरा गोरखपुर से देउरिया को जाने वाली सड़क पर गोरखपुर से १५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। अवध तिरहुत रेल की प्रधान लाइन का यह एक स्टेशन है। स्टेशन से एक सड़क उत्तर की ओर डुमरी और पिप्रैच को जाती है। स्टेशन के पास बाज़ार है। यहां चीनी बनाने और तेल पेरने की मिलें हैं। डुमरी के सिक्ख ज़मींदार यहां के भी ज़मींदार हैं। चौरी चौरा गोरखपुर जिले में व्यापार का केन्द्र है। यहां कानपुर और कलकत्ते से व्यापार का बहुत सा सामान आता है। चौरी चौरा से मिला हुआ उत्तर की ओर मुडेरा का बाज़ार है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। पिछले

असहयोग के अवसर पर जनता ने उत्तेजित होकर थाने को जला दिया। अहिंसा के सिद्धान्त पर आचरण न करने वाले यहां के लोगों से रुष्ट होकर महात्मा गांधी ने भारतवर्ष भर में असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया था।

देउरिया कस्बा कसिया से बरहज को जाने वाली पक्की सड़क और गोरखपुर से छपरा को जाने वाली कच्ची सड़क पर गोरखपुर से ३२ मील दूर है। यहां प्रधान रेलवे लाइन का स्टेशन है। एक कच्ची सड़क दक्षिण-पश्चिम की ओर रुद्रपुर को और उत्तर की ओर हाटा को गई। देउरिया में कई गांव शामिल हैं। यहां रेलवे स्टेशन, तहसील, थाना, तार-डाकखाना, अस्पताल, हाई स्कूल, और मिडिल स्कूल है। देउरिया कपड़े और रुई के व्यापार का केन्द्र है। देउरिया को पूर्वी भाग का एक पृथक जिला बनाने का कई बार प्रस्ताव हुआ। लेकिन यह नगर निचली भूमि पर बसा है। प्रबल वर्षा होने पर इसके समीप की भूमि बाढ़ के जल से डूब जाती है। भरौली बाजार में धनी मारवाड़ियों के सुन्दर घर बने हैं। यहां पर धर्मशाला और सुन्दर तालाब है। पुराने बाजार की भीड़ को कम करने के लिये शाक भाजी की बिक्री के लिये एक नया बाजार बनाया गया। नगर के बाहर एक नई सड़क बनाई गई इसके पड़ोस में नये घर बन गये। उत्तर की ओर करना नदी के किनारे एक टीले पर शिव जी का एक पुराना मन्दिर है। देव स्थान होने से इसका नाम देवरिया पड़ा। उत्तर-पूर्व की ओर कसिया की सड़क पर बमनी गांव में पुराने भग्नावशेष हैं। इनमें कुछ पुराने मन्दिरों की नींवें हैं। पश्चिम की ओर

४० गज लम्बा चौड़ा एक पक्का ताल है। गोरखपुर की सड़क पर करना के आगे पुराने कच्चे किले के खंडहर हैं। टीले की चोटी पर एक शहीद का मकबरा है।

ढकवा बाजार कुवना के बायें या उत्तरी किनारे पर गोरखपुर से सिकरीगंज को जानेवाली सड़क से १ मील पश्चिम की ओर स्थित है। यह गोरखपुर से १९ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। पहले यह अनाज की बड़ी मंडी थी। कुवना के मार्ग से आया हुआ अनाज इकट्ठा होता था। रेलवे के खुल जाने पर अनाज सहजनवा स्टेशन से बाहर जाने लगा। कुछ व्यापार इस समय भी होता है। रविवार और बुधवार को बाजार लगता है। यहां कपड़ा पीतल के बर्तन आदि बिकते हैं। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

धानी कस्बा रिगौली से ९ मील और गोरखपुर से ३३ मील दूर है। बाजार पास वाले कानापार गांव में स्थित है जो धमेला के किनारे पर है। पहले नैपाल में समीपवर्ती भागों और पश्चिमी महाराजगंज का व्यापार वहीं इकट्ठा होता था। व्यापार का सामान नदी के मार्ग से जाता था। रेल के आजाने पर यह व्यापार ब्रिजमनगंज के हाथ में चला गया जो यहां से ६ मील दूर है। वर्षा ऋतु को छोड़ कर शेष ऋतुओं में फिर भी कुछ व्यापार होता है। वर्षा ऋतु में नदी में ३० फुट ऊंची बाढ़ आती है। बाजार सोमवार को लगता है। यहां डाकखाना और मिडिल स्कूल है।

धुरिया पार कुवना नदी के बायें किनारे पर स्थित है।

यहां होकर शाहपुर से डर्वा बाजार को सड़क जाती है। इसे प्रथम कौशिक राजा धुरचन्द ने बसावा था। धुरियापार चिरकाल तक कौशिक राजाओं की राजधानी रहा। उनके बनाए हुये कोट (किले) के खंडहर नदी के किनारे पर दिखाई देते हैं।

डुमरी गांव चौरा स्टेशन से पिप्रैच को जाने वाली सड़क के पूर्व में स्थित है। गोरखपुर से कसिया को जाने वाली सड़क यहां से दो मील दूर है। गोरखपुर से यह १५ मील पूर्व की ओर है। डुमरी राज्य में ५९ गांव शामिल हैं। यह राज्य ग़दर दबाने में सहारा देने वाले सरदार सूरत सिंह को पुरस्कार के रूप में दे दिया गया। यहां मिडिल स्कूल अस्पताल और बाजार है।

गजपुर राप्ती के दाहिने किनारे पर गोरखपुर से २१ मील और बांस गांव तहसील से १० मील दूर है। यह गोरखपुर से आजमगढ़ को जाने वाली सड़क पर स्थित है यहां दो सड़कें कौरी राम और गगहा से आती है। एक सड़क नदी के घाट को गई है। यहां से कछार के पार एक मार्ग रुद्रपुर को गया है। पहले राप्ती में ऊपर और नीचे की ओर जाने वाली नावें।यहां ठहरा करती थी। नदी के व्यापार के नष्ट हो जाने से गजपुर का व्यापारिक महत्व जाता रहा। आरम्भ से यह स्थान सतासी राजवंश के अधिकार में रहा। नदी के पास अन्तिम राजा लाल साहब के दादी की बनवाई हुई कोठी है। यहां प्राइमरी स्कूल और बाजार है।

गोला को मदरिया और गोला गोपालपुर भी कहते हैं। यह घाघरा नदी के किनारे पर गोरखपुर से ३२ मील दक्षिण की

ओर है। यहां से गोरखपुर को सड़क गई है। पहले गोला कुवना नदी के किनारे स्थित था। १८७२ में इस नदी का पानी घाघरा में चला गया। इससे गोला का व्यापार कम हो गया। आगे चलकर कुवना में जल बढ़ गया और घाघरा अधिक उत्तर की ओर हटकर बहने लगी। शाहपुर के पास कुवना और घाघरा का संगम हो गया। नदी के इधर उधर हो जाने से तो गोला को धक्का पहुँचा ही था। लेकिन रेल के खुल जाने से गोला का व्यापारिक महत्व बहुत कम हो गया। अधिकतर व्यापारी गोला को छोड़कर मुंडेर्वा और दूसरे स्थानों को चले गये। यहां थाना, डाकखाना, इन्स्पेक्शन बंगला और मिडिल स्कूल है। गोला को गोपालपुर के एक राजा ने बसाया था।

गोपालपुर गोला से ३ मील उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़लगंज से सिकरीगंज को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह गोरखपुर शहर से ३० मील दूर है। इसके पास ही गोरखपुर और रुद्रपुर से आने वाली सड़क मिलती है। यहां एक कौशिक राजवंश की राजधानी रही। कोठी के आगे कुछ ही दूरी पर एक बड़ा टीला है। यहां उनके पूर्वजों के बनवाये हुये क़िले के खंडहर हैं। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।

गोरखपुर शहर इसी नाम की कमिश्नरी जिले और तहसील का केन्द्र स्थान है। यह २६°४५′ उत्तरी अक्षांश और ८३°२२′ पूर्वी देशान्तर पर समुद्रतल से ३३५ फुट की ऊंचाई पर कलकत्ते से ५०६ मील, इलाहाबाद से १६२ मील बनारस से १३१ मील और फैजाबाद से ८५ मील दूर है। गोरखपुर

शहर राप्ती नदी के किनारे स्थित है। इसके पास ही रोहिन नदी राप्ती में मिलती है। रेलवे के पुल के आगे इसे अजबनिया नाला कहते हैं। अजबनिया नाला शहर की पश्चिमी सीमा बनाता है। राप्ती नदी बर्ड घाट के पास शहर के सिरे को छूकर दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। पूर्व की ओर रामगढ़ ताल पुरानी छावनी की सीमा बनाता है। उत्तर-पश्चिम की ओर समतल भूमि है। वर्षा ऋतु में डोमिनगढ़ और कमैनी तालों की बाढ़ का पानी दूर तक भूमि को डुबा देता है। अवध तिर-हुत रेलवे की प्रधान लाइन शहर के उत्तरी आधे भाग में होकर जाती है। इसकी प्रधान स्टेशन पूर्व की ओर है। दूसरी स्टेशन पश्चिम की ओर डोमिनगढ़ में है। बड़ी स्टेशन से एक शाखा लाइन उत्तर की ओर उस्का और तुलसीपुर को जाती है। एक लाइन केप्टेनगंज और बगहा को गई है। प्रान्तीय पक्की सड़क शहर के पश्चिमी सिरे से बर्ड घाट के पास बस्ती और फैजा-बाद को जाती है। बर्ड घाट के पास वर्षा के अन्त में राप्ती नदी के ऊपर पीपों का पुल बन जाता है। एक पक्की सड़क दक्षिण की ओर आजमगढ़ को जाती है और भाऊ पार के पास राप्ती को पार करती है। गोरखपुर से और कई सड़कें भिन्न भिन्न दिशाओं को गई हैं।

गोरखपुर संयुक्तप्रांत के बड़े शहरों में से एक है। घाघरा के उत्तर वाले प्रदेश में यह प्रान्त का सब से बड़ा शहर है। यहां दो तिहाई हिन्दू और एक तिहाई मुसलमान बसे हैं। मुसलमानों का अनुपात दूसरे शहरों की अपेक्षा यहां अधिक इसलिये है कि अंग्रेजी राज्य के पूर्व यहां घाघरा के उत्तर में मुसलमानी सेना

का अड्डा था। पहले राप्ती नदी अधिक उत्तर और पूर्व की ओर रामगढ़ ताल में होकर बहती थी। कुओं के खोदने पर नीचे प्रायः मान की लकड़ी मिलती है। अतः पुराना शहर वर्तमान शहर से अधिक उत्तर की ओर बसाया गया था। पुराने शहर के दो ओर राप्ती और रोहिन नदियों से रक्षा होती थी। पीछे की ओर उत्तर-पूर्व में घना जङ्गल था। कहते हैं राठौर राजपूत मानसेन ने दसवीं शताब्दी में गोरखपुर बसाया था। कुछ लोग उसे थारू बतलाते हैं। उसी ने मानसरोवर (ताल) बनवाया था। कौलादह उसकी स्त्री कलावती ने बनवाया था। डोमकटारों के आने के समय तक उसके वंशज राज्य करते रहे। इन नवागन्तुकों ने रोहिन और राप्ती के संगम के समीप एक द्वीप पर एक कोट (किला) बनवाया। वर्षा में इसके चिन्ह कभी कभी दिखाई दे जाते हैं। सरनेत राजपूतों ने डोमिन कटारों की शक्ति नष्ट कर दी। गोरखपुर के समीप का प्रदेश सतासी राजाओं को मिला। प्रायः १४०० ईस्वी में इस राजवंश के सदस्यों में आपस में झगड़ा हुआ। कुछ सदस्यों ने रामगढ़ के तट पर हुये पुराने कोट को छोड़ दिया और गुरू गोरख नाथ बने (मछन्दर नाथ) की समाधि के समीप पुराने गोरखपुर में अपना निवास-स्थान बनाया। १६१० ईस्वी में राजा बसन्त सिंह के आधिपत्य में सरनेत राजपूतों ने मुसलमानी सेनाओं को भगा दिया। और बसन्तपुर मुहल्ले में नया गढ़ बनाया। यहाँ ७० वर्ष तक राजपूतों का प्रभुत्व रहा। १६८० में काजी खलीलुर्रहमान ने राजा रुद्रसिंह को यहां से निकाल दिया उसने किले

की मरम्मत करवाई और यहां मुसलमानी सेना का अड्डा बनाया। यह किला आयताकार था। इसके कोनों पर बुर्ज बने हुये थे। इसके कुछ ही समय बाद युवराज मुअज्जम (जो आगे चलकर बहादुर शाह के नाम से विख्यात हुआ।) यहां शिकार करने के लिये आया। उसके सम्मानार्थ शहर का सरकारी नाम मुअज्जमाबाद रख दिया गया। १८०१ तक सरकारी नाम यही रहा। पहले यहां शाही सेना फिर अवध के नवाब की सेना रही। १८०१ में यहां ब्रिटिश अधिकार हो गया और शहर का सरकारी नाम भी गोरखपुर हो गया। कहते हैं जब प्रथम अंग्रेज ने यहां डेरा डाला तो पड़ोस में इतने चीते थे कि उसे अपने डेरे के चारों ओर हाथी रखने पड़ते थे और आग जलती रखनी पड़ती थी। गोरखपुर की प्रथम सिविल लाइन कप्तान गंज मुहल्ले में थी। १८१० में गोरखपुर केप्टेन गंज मुहल्ले में थी। गरमी की ऋतु में सभी अंग्रेज अफसर किले में चले आते थे। इसकी मोटी दीवारों के भीतर कम गरमी लगती थी। यहां छावनी बनाने में यह लाभ था कि नैपाल की सीमा की भली भांति रक्षा की जा सकती थी। नैपाल युद्ध में इसका महत्व और अधिक बढ़ गया। गदर में विद्रोहियों का अधिकार हो जाने पर भी शहर के कोई भारी स्थायी हानि नहीं पड़ी। १८८६ में छावनी तोड़ दी गई। १८९१ में यहां कमिश्नरी बनी। रेलवे के खुलने पर भी शहर की वृद्धि हुई। धीरे धीरे शहर उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ता गया। वर्तमान शहर उत्तर से दक्षिण तक तीन मील के विस्तार में है। पूर्व से पश्चिम की ओर

शहर और भी अधिक फैला हुआ है। शहर के बीच बीच में आम और दूसरे वृक्षों की अधिकता से प्रायः सब कहीं हरा भरा रहता है। बीच बीच में शाक भाजी के खेत हैं। फिर भी कुछ मुहल्ले अधिक घने हैं। शहर में कई मुहल्ले हैं। इनमें २९ दक्षिणी भाग में हैं। २४ उत्तरी भाग में हैं। दोनों के बीच में एक बड़ा नाला है। रेलवे लाइन के उत्तर में माधोपुर, हुमायूं पुर और पुराना गोरखपुर के मुहल्ले अलग अलग बसे हैं। पुराने गोरखपुर मुहल्ले में मानसरोवर और कोलादह ताल हैं। यहीं गोरखपुर का प्रसिद्ध मन्दिर है। यह प्राचीन मन्दिर मानसरोवर के उत्तर में है और आम के वृक्षों से घिरा है। यहां कनफटा जोगी रहते हैं। मन्दिर का दर्शन करने के लिये दूर दूर से यात्री आते हैं। मन्दिर में यात्री जो भेंट चढ़ाते हैं उसी से मन्दिर का खर्च चलता है। दक्षिणी भाग में अली नगर का मुहल्ला अधिक प्रसिद्ध है। इसी में धनी महाजनों के घर बने हैं। जतेईपुर मुहल्ले में कीर्तिचन्द धर्मशाला है जहां रेल से उतरने वाले यात्री ठहरते हैं। नगर के दक्षिण में मियां बाजार, उर्दू बाजार, साहब गंज और बसन्तपुर मुहल्ले हैं। वसन्तपुर मुहल्ला नदी के समीप दक्षिणी पश्चिमी सिरे पर है। यहीं पुरानी जेल उस स्थान पर बनाई गई जहां राजा बसन्त सिंह का किला बना था। दक्षिण की ओर पुरानी पक्की सराय उत्तर की ओर बगलादह ताल है। इसके किनारे पर म्यूनिसिपेलिटी का बगीचा है। इसके पूर्व में कव्वादह नाम का दूसरा ताल है। इन दोनों के बीच में होकर साहबगंज मुहल्ले की प्रधान सड़क जाती है। इसके

उत्तर में जहां पुरानी पुलिस लाइन थी वहां साल्वेशन आर्मी (मुक्त सेना) ने डोम बसा दिये। बसन्तपुर के पूर्व की ओर हल्सेगंज (बाजार सब खपरैलों से छाया हुआ है। यहां कई सड़कें मिलती हैं। इसके उत्तर-पूर्व में उर्दू बाजार है जो शहर का प्रधान व्यापारिक केन्द्र है। इसके पास ही जामा मस्जिद है जिसे सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में शाहजादा मुअ-ज्जम (बहादुरशाह) के सम्मानार्थ खलीलुर्रहमान ने बनवाया था। अधिक पूर्व में मियां बाजार है। यह नाम मिया साहब की स्मृति में रक्खा गया जिन्होंने रौशनअली के मकबरे के पास बड़ा बाजार बनवाया था। इसके पूर्व में डफरिन अस्पताल, डाकखाना और कैम्पियर हाल है। यह हाल कैम्पियर साहब की स्मृति में बनाया गया जो इस जिले के उत्तरी भाग में बन के कई भागों के मालिक थे। इसका सब से बड़ा कमरा पड-रौना कमरा कहलाता है जिसके बनाने के लिये पडरौना के राजा साहब ने १५,००० रुपया दिया था। कुछ चन्दा शहर के निवासियों ने दिया था। हाल के सामने महारानी विक्टोरिया की स्टेचू (मूर्ति) है। मियां बाजार के पश्चिम में नखास मुहल्ले में कोतवाली है। उत्तर-पश्चिम की ओर जुबली हाई स्कूल और गोरखपुर बैंक है। दक्षिण की ओर तारघर और धर्मशाला है। कुछ ही दूर नार्मल स्कूल है। शहर के प्रायः मध्यवर्ती भाग में गीता प्रेस है जहां से गीता सम्बन्धी साहित्य और कल्याण का प्रकाशन होता है। म्यूनिसिपेलिटी के पूर्व में सिविल लाइन, पुरानी छावनी और कई गांव हैं। कैम्पियर हाल के सामने खुली जगह में मजिस्ट्रेट का दफ्तर, पुलिस

का दफ्तर और खजाना है। एक दम दक्षिण की ओर चर्च मिशनरी सोसाइटी का अंग्रेजी गिरजाघर है। यहीं ईसाई बस्ती है। अधिक पूर्व में कमिश्नरी की कचहरी और दफ्तर है। इसके पास ही सेशन्स जज और मातहत जजों की कचहरियां और वकीलों की लाइब्रेरी है। इसके आगे परेड का मैदान है। उत्तर-पूर्व की ओर गुरखा धर्मशाला है। पूर्वी सिरे पर दौड़ का मैदान और पार्क है।

नोटीफाइड एरिया के उत्तर में रेलवे स्टेशन है। लाइन के दोनों ओर बहुत सी भूमि में रेलवे का ही कारबार है। यहां अवध तिरहुत रेलवे कम्पिनी के एजेंट का बंगला, रेलवे कर्मचारियों के रहने की जगह और इंजनों का बाड़ा और मरम्मत करने का कारखाना है। रेलवे बस्ती के आगे डिस्ट्रिक्ट जेल है।

गोरखपुर शहर राप्ती नदी की ऊंची बाढ़ के तल से नीचा है। यदि पश्चिमी सीमा और इलाहीबाग के पास बांध न हो तो भारी बाढ़ में शहर का प्रायः समस्त दक्षिणी भाग डूब जावे। गोरखपुर कोई कारबारी नगर नहीं है। तम्बाकू और चमड़े पर गोटा लगाने का काम अच्छा होता है। कुछ बढ़ई भी होशियार हैं। रायगंज मुहल्ले में पालकी बनाई जाती है। पर अधिकतर कारीगर रेलवे के कारखाने में चले गये।

गोरखपुर कमिश्नरी में शिक्षा का सब से बड़ा केन्द्र है। यहां का जिला हाई स्कूल (जिसे आज कल जुबली हाई स्कूल कहते हैं) १८७५ ई० में स्थापित हुआ। सेंट एंड्रूज कालेज का प्रबन्ध चर्च मिशनरी सोसाइटी के हाथ में है। इसी की

ओर से यहां एक हाई स्कूल एक मिडिल स्कूल और पांच प्राइमरी स्कूल हैं। इनके अतिरिक्त यहां इस्लामिया इंटर कालेज और प्रताप हाई स्कूल है। हाटा इसी नाम की तहसील के केन्द्र स्थान है। यह गोरखपुर से २३½ मील पूर्व की ओर कसिया को जाने वाली सड़क पर स्थित है। एक कच्ची सड़क उत्तर-पश्चिम में पिप्रैच और दक्षिण में देउरिया को गई है। १८७२ ई० में यहां तहसील की नई इमारत बनी। तहसीली के अतिरिक्त यहां रजिस्ट्री का दफ्तर थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। यहां एक धर्मशाला और ईदगाह भी है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। कहाओं जिले का एक प्राचीन स्थान है। यहां मुसेला से भागलपुर को जानेवाली सड़क काटती है। यह सलेमपुर स्टेशन से ५ मील और गोरखपुर से ५३ मील दूर है। यह मझौली राज्य का एक गांव है। सथरांव स्टेशन इसके समीप है। गांव १२०० फुट लम्बे और ४०० फुट चौड़े एक टीले पर बसा है। यहां पुराने समय की ईंटें बिखरी हुई हैं। यहां कुछ पुराने कुयें हैं जो पुराने समय की बड़ी बड़ी ईंटों से बनाये गये हैं। यहां भूरे खुरदरे पत्थर का एक प्राचीन स्तम्भ है। यह साढ़े चौबीस फुट ऊंचा है। इसके चारों ओर लोहे की एक छड़ लगी है। इससे सिद्ध होता है कि प्राचीन समय में इस पर सिंह की एक मूर्ति बनी थी। यह स्तम्भ आरम्भ में वर्गाकार बीच में षोडश भुजाकार और ऊपर गोल है। निचले भाग में जैन मूर्तियां बनी हैं। इसमें १४१ गुप्त सम्वत का एक लेख है। स्तम्भ के उत्तर में मन्दिर की एक दीवार के खंडहर हैं। इस मन्दिर में

पांच मूर्तियां थीं जिनका इस स्तम्भ में उल्लेख है। पड़ोस में और कई मन्दिरों के खंडहर हैं। स्तम्भ के पास ही तीन प्राचीन ताल (पुरेना, कढ़ाही और झकराही) हैं। पुरेनाताल के किनारे एक पुराने मन्दिर के खँडहर हैं। इसमें बुद्ध भगवान की भग्न मूर्ति है जो पहले ७ फुट ऊंची थी। गांव के पूर्व में आकाश कामिनी नाम का दूसरा ताल है। यही नाम इस मन्दिर का था। पहले यह स्थान ककुभ कहलाता था जैसा स्तम्भ के लेख में है। गांव का वर्तमान नाम ककुभ ग्राम या ककुभ वन का अपभ्रंश है।

कसिया गोरखपुर से ३४ मील पूर्व में देउरिया से २१ मील उत्तर-पूर्व में और पडरौना से १२ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। गोरखपुर से एक पक्की सड़क कसिया होकर बभनौली और पिप्रा घाट को जाती है। एक सड़क दक्षिण-पूर्व की ओर काजीपुर और छपरा को जाती। यहां जाइंट मजिस्ट्रेट का बंगला, कचहरी, थाना, डाक-तारघर इन्स्पेक्शन बंगला, अस्पताल, पड़ाव और मिडिल स्कूल है। १९०६ में यहां की छोटी जेल तोड़ दी गई। १९०८ में पटवारी स्कूल तोड़ दिया गया। पटवारी स्कूल गोरखपुर चला गया। यहां सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

कसिया के पश्चिम में विशुनपुर गांव में गोरखपुर रोड (सड़क) और रामाभर ताल के बीच में जिले भर में सब से अधिक महत्वपूर्ण प्राचीन भग्नावशेष मिले हैं। यहां मिट्टी की पुरानी मुहरें मिलीं। इसका पुराना नाम विष्णु द्वीप था।

यहां ईंटों का बना हुआ एक स्तूप निकला जो ५० फुट ऊंचा है। इसके ऊपर वृक्ष उग आये थे। दूसरा टीला कुछ छोटा है और अनुरुध्व गांव के उत्तर-पूर्व की ओर है। रामभर स्तूप से १ मील पश्चिम की ओर मठ कुंअर का कोट है। इसमें एक मन्दिर है। इसके भीतर मरणासन्न बुद्ध भगवान की लेटी हुई मूर्ति है। इसके पड़ोस में और कई मठ और भवन हैं। चौथा मठ कुअर है। इसमें आसनबद्ध बुद्ध भगवान की विशालकाय मूर्ति है। यह गया के नीले धुंधले पत्थर की बनी है। बुद्ध भगवान बोधि वृक्ष के नीचे बैठे हैं। देवतागण उनकी सेवा कर रहे हैं। यह कोट से प्राय: ४०० गज दक्षिण-पश्चिम की ओर है। कोट के उत्तर और पूर्व में भीमावत है। इसमें दीवार का एक घेरा और कुछ छोटे छोटे टीले हैं। श्रद्धालु बौद्ध यात्रियों ने लेटी हुई मूर्ति पर सोने का पत्र चढ़वा दिया है। इन सब चिन्हों से सिद्ध होता है कि कसिया वह स्थान है जहां बुद्ध भगवान ने महानिर्वाण प्राप्त किया था।

खामपार भटपार स्टेशन से आनेवाली सड़क के पूर्व में मझौली से ८ मील और गोरखपुर से ६१ मील दूर है। यहां थाना डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

खुखुन्दू गांव गोरखपुर से सलेमपुर और छपरा को जाने वाली सड़क से १ मील पूर्व की ओर नुनखार रेलवे स्टेशन से २ मील (दक्षिण-पश्चिम में) देउरिया से ८ मील और

गोरखपुर से ४४ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां थाना पड़ाव और प्राइमरी स्कूल है।

इसका पुराना नाम किष्किन्धापुर है। इसके पड़ोस में कई प्राचीन टीले और भग्नावशेष हैं। यहां नीले पत्थर की बनी हुई विष्णु, शिव, पार्वती और गणेश जी मूर्तियां मिली हैं। कुछ जैन मूर्तियां भी हैं। एक नये जैन मन्दिर में प्रथम तीर्थंकर विशम्भर नाथ की मूर्ति है। यहां पटना और गोरखपुर के अग्रवाल सराउगी दर्शन करने आते हैं। कुछ लोग पारस-नाथ की मूर्ति बतलाते हैं। लार में गोरखपुर और देउरिया से छपरा को जानेवाली सड़क सिकरीगंज से आनेवाली सड़क से मिलती है। यह गोरखपुर से ५८ मील और देउरिया (तहसील) से २४ मील है। भटनी बनारस लाइन का लार रोड रेलवे स्टेशन यहां से ४ मील दूर है। यहां बशिष्ठ मुनि का बनवाया हुआ एक प्राचीन मन्दिर है। कहते हैं जब बशिष्ट जी की काम धेनु को चीता उठा ले गया है तो मार्ग में गाय के मुंह से गिरी हुई लार को देख कर उसका पता लगाया था। इसी से इस नगर का यह नाम पड़ा। लार में मुसलमानों का एक बढ़िया इमामबाड़ा है। यहां साबुन बहुत बनाया जाता है और नैपाल को भेजा जाता है। यहां अनाज, सन, चीनी और चमड़े का व्यापार होता है। चमड़ा कानपुर को भेज दिया जाता है। यह नैपाल से बहुत सा व्यापार का सामान आता है। यहां के व्यापारी कलकत्ते और पटने से व्यापार करते हैं। लार में थाना डाकखाना मिडिल और ट्रेनिंग स्कूल है।

महाराजगंज इसी नाम की उत्तरी तहसील का केन्द्र स्थान है और गोरखपुर शहर से ३६ मील उत्तर की ओर बलिया नदी के किनारे स्थित है। यहां से उत्तर-पूर्व की ओर निचलौल, पश्चिम की ओर फरेंदा रेलवे स्टेशन को सड़कें गई हैं। १६८० में यहां तहसील बनी। इसके अतिरिक्त यहां थाना, अस्पताल, डाकखाना, इन्स्पेक्शन बंगला धर्मशाला और मिडिल स्कूल है। बन पास होने और हवा में अधिक नमी होने से वर्षा ऋतु में यहां की जलवायु बड़ी अस्वास्थ्यकर रहती है।

मन्सूरगंज हाटा तहसील की उत्तरी सीमा पर गोरखपुर से १८ मील उत्तर पूर्व की ओर है। यहां से एक सड़क दक्षिण की ओर पिप्रैच स्टेशन होती हुई गोरखपुर को जाती है। उत्तर की ओर यह सड़क पर्तवाल, हरपुर और निचलौल को गई है। १८४५ में यह तहसील का केन्द्र स्थान बना। १८६० में तहसील महाराजगंज को चली गई। यहां थाना डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। प्रति सोमवार को बाजार लगता है।

निचलौल महाराजगंज (तहसील) से १६ मील और गोरखपुर से ४१ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां कई सड़कें मिलती हैं। दक्षिण की ओर प्रिप्रैच स्टेशन, दक्षिण-पश्चिम में बाणपार, ब्रिजमनगंज और गोरखपुर को दक्षिण में कोठीभार स्टेशन और केप्टेन गंज को सड़कें जाती है। उत्तर की ओर दो सड़कें नैपाल की सीमा के पास थूथीबारी और बहवर को गई हैं। पहले यह एक बड़ा व्यापार केन्द्र था। फिर रेल ने इसके व्यापार को छीन लिया। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। वृहस्पतिवार को बाजार लगता है। यह

प्राचीन स्थान है। यहीं पुराना तिलपुर था जो मुसलमानी आक्रमण में नष्ट हो गया। यहां तिलपुर के राजाओं की राजधानी थी। बुटवल के राजा भी यहां कुछ समय तक रहे। वे गदर में सम्मिलित हुये। अतः उनकी पेन्शन और राजा की उपाधि छीन ली गई।

पडरौना पांच गांवों के मिलने से बना है। यह इसी नाम की पूर्वी तहसील का केन्द्र स्थान है। यह केप्टेनगंज से बंसी घाट और बेतिया को जाने वाली सड़क पर कसिया से १२ मील और गोरखपुर से ४९ मील दूर है। पडरौना से उत्तर में नौरंगियां और सिसवा बाजार को दक्षिण-पूर्व में तिवरी पट्टी और तमकुही को दक्षिण में समूर और छपरा को सड़कें गई हैं। पडरौना बनरी नदी के पास स्थित है। यह नदी वर्षा ऋतु में बहने लगती है। ऐसा जान पड़ता है कि जहां इस समय बनरी नदी बहती है वहीं पहले गंडक का पुराना मार्ग था। १८७८ में जब इधर एक बड़ा ताल खोदा गया तो तली में नीचे एक बड़ी नाव गड़ी मिली। पडरौना की जलवायु अच्छी नहीं है। पर यह स्थान बड़ा प्राचीन है। पुरातत्ववेत्ताओं की दृष्टि में यहीं बौद्ध कालीन पावा स्थित था। पडरौना के दक्षिण में एक बड़ा खेरा (टीला) है जो टूटी ईंटों से ढका है। यह २२० फुट लम्बा १२० फुट चौड़ा और १४ फुट ऊँचा है। यहां एक प्राचीन बौद्ध बिहार था। कहते हैं पावा में बुद्ध भगवान की शव की अस्थियों का आठवां भाग पावा को मिला था। इन्हीं के ऊपर एक विशाल स्तूप बनाया गया था। कहते हैं मुसलमानों ने इस स्थान को उजाड़ दिया था। यहां से ४

मील की दूरी पर सैयद सालार मसूद के एक साथी बुढ़ान शहीद का मकबरा बना हुआ है। पन्द्रहवीं शताब्दी में पडरौना पर एक राजपूत सरदार मदन सिंह का अधिकार हो गया। उसने इसे अपने पुरोहित रासू को दे दिया। पर अब से सवा दो सौ वर्ष पहले यहां कुरमी आकर बस गये। जब से यहां कुरमी राज्य की स्थापना हुई तब से पडरौना की उन्नति हुई। ब्रिटिश राज्य के आरम्भ में पडरौना के रईसों की जायदाद कुछ कम हो गई। लेकिन जब सिंह साहब मर गये तो राय ईश्वरी प्रताप राय ने उनका जंगल लगभग सवा लाख रुपये में मोल ले लिया। इनको राजा की उपाधि मिल गई। इस वंश के राजा की सुन्दर कोठी पडरौना के पास बनी हुई है। पडरौना के तीन भाग हैं। पडरौना प्रधान, साहबगंज जो उत्तर की ओर बंसी घाट के समीप है। छावनी कसिया सड़क के पास है। साहबगंज को फिंच नाम के एक निलहे गोरे ने बसाया था। प्रधान पडरौना साहब गंज से मिला हुआ है। यहीं बाजार है। यहां तांबे और फूल के बर्तन बनाये जाते हैं। यहां तहसील, थाना, डाक, तारघर, अस्पताल, हाई और मिडिल स्कूल है। उत्तर की ओर एक बड़ा ताल है। इसके किनारे श्यामधाम और रामघाट नाम के दो मन्दिर बने हुये हैं। पडरौना और छावनी में ही तहसील है। किसी समय यहां अवध के नवाब वजीर के सिपाही रहते थे। इसलिये इसका नाम छावनी पड़ गया।

पैकुली गांव देउरिया से रुद्रपुर को जाने वाली सड़क से दो मील पूर्व की ओर देउरिया (तहसील) से ७ मील दक्षिण-

पश्चिम की ओर है। इसके पास वाले सरौली कोट (किले) की रक्षा के लिये मझौली के राजा यहां सारन से आये हुये राजपूतों को बसा दिया था। यहां एक स्कूल है। प्रति सप्ताह बाजार लगता है। यहां एक बड़ा ठाकुर द्वारा वैष्णव वैरागियों का मठ और सरोवर है।

पैना का बड़ा गांव घाघरा के उत्तरी किनारे पर घाघरा और कच्ची सड़क के बीच में स्थित है जो बरहज को जाती है। पैना गांव बरहज से ४ मील और गोरखपुर से ४४ मील दूर है। पैना बैल हांकने की लकड़ी को कहते हैं। कहते हैं यहां एक साधू आया था। उसे एक पैने के बराबर ही जमीन मिली थी। उसके मरने पर उसकी समाधि यहां बनी। इसके चारों ओर जो गांव बसा उसका नाम पैना पड़ गया। पहले यहां बिसेन जमीदार थे। गदर में इन्होंने सरकारी बैलगाड़ियों को जीत लिया। अतः गदर के बाद यह गांव जीत लिया गया और मझौली के राजा को दे दिया गया। कहते हैं बिसेन लोगों को दंड देने के लिये जो सेना आई वह इनकी कुछ स्त्रियों को भी ले गई। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।

पनेरा गांव केप्टेन गंज से केम्पियर गंज और कमैनी घाट को जाने वाली सड़क पर केप्टेन गंज से १६ मील और गोरखपुर २४ मील की दूरी पर बन के किनारे स्थित है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। यहां प्रति सप्ताह एक छोटा बाजार लगता है।

पिप्रैच गांव केप्टेन गंज को जानेवाली सड़क पर गोरखपुर

से १३ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां से दक्षिण में बढ़ी, पूर्व में हाटा को, उत्तर में निवलौल को सड़क जाती है। रेलवे की शाखा लाइन पास ही है। यहां शक्कर बनाने का काम बहुत होता है। बाज़ार में अनाज, कपड़ा और धातु के बर्तनों का व्यापार होता है। पास वाले सिधवा गांव में भी बाज़ार लगता है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। रामकोला बनरी के बायें किनारे पर पडरौना से दस मील पश्चिम की ओर गोरखपुर से ३३ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। प्रतिसप्ताह एक छोटा बाजार लगता है।

रामपुर लानपुर या रामपुर कारखाना देउरिया से कसिया को जानेवाली पक्की सड़क के पास देउरिया से ५ मील और गोरखपुर से ३८ मील दूर है। एक पक्की सड़क देउरिया रेलवे स्टेशन को जाती है। चीनी के कारबार का यह जिले में एक प्रधान केन्द्र है। यहां डाकघर और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

रिगौली कैम्पियर गंज रेलवे स्टेशन से ३ मील और गोरखपुर २० मील उत्तर-पश्चिम की ओर धमेला के किनारे पर राप्ती संगम के समीप स्थित है। इसके सामने कमैनी घाट है जहां गोरखपुर, केप्टेनगंज और बिजमन गंज से आनेवाली सड़कें मिलती हैं। यह राप्ती नदी का जिले भर में सबसे अधिक महत्वपूर्ण घाट है। यहां थाना, डाकखाना, और प्राइमरी स्कूल है। यहां के जुलाहे गाढ़ा बुनते हैं और मनिहार चूड़ियां बनाते हैं। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है।

रुद्रपुर गोरखपुर से बरहज को जानेवाली सड़क पर गोरख-

पुर से २७ मील दूर है। यहां उत्तर-पूर्व में देउरिया और उत्तर में हाटा से आने वाली सड़कें मिलती हैं। इसके पश्चिम की ओर मझनाया बधुआ नदी बहती है। कुछ ही दूर दक्षिण की ओर इसमें करना नदी मिलती है। वर्षा ऋतु में इसमें नावें चल सकती हैं। पर यहां कोई बड़ा व्यापार नहीं होता है। यहां थाना, डाकखाना अस्पताल और प्राइमरी स्कूल है। मझना के किनारे गोला में अनाज का व्यापार होता है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। कहते हैं रुद्रपुर ही प्राचीन हंस क्षेत्र है जिसका चीनी यात्रियों ने उल्लेख किया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि अयोध्या से आकर बशिष्ट सिंह नामी एक राजपूत ने यहां नव काशी नाम का एक नगर बसाया। पहले इसे भारों ने छीन लिया। फिर यहां सतासी के सरनेत राजपूतों का अधिकार हो गया। वर्तमान नाम राजा रुद्र सिंह की स्मृति में पड़ा। उन्होंने यहां किला बनवाया था। उत्तर की ओर पौन मील की दूरी पर प्राचीन सहनकोट या नाथ नगर है। यह एक विषम चतुर्भुज घेरा है। इसकी चौड़ाई दो-ढाई हजार फुट है। इसके दक्षिण में दूसरा बाहरी और निचला घेरा है। इसकी लम्बाई ३७०० फुट और चौड़ाई २५०० फुट है। इसके कुछ भाग में खेती होती है। किले के चारों ओर १५ से २५ फुट तक ऊंची चारदीवारी है।

कुछ लोग यहां की ईंटे और पत्थर घर बनाने के लिये निकाल ले गये। कोट की दीवार के पास दूधनाथ का पुराना मन्दिर है। इसके चारों ओर आठ नये मन्दिर हैं।

इसमें विष्णु की विशाल मूर्ति और जैनियों के अन्तिम तीर्थङ्कर की छोटी मूर्ति है। इसके पड़ोस में अनेक टीले और भग्नावशेष लम्बाई और चौड़ाई में दो दो मील तक बिखरे हुये हैं। निस्सन्देह यहां पहले कोई बड़ा नगर था। राजा रुद्र सिंह के समय से गदर तक यहां सतासी राजवंश की राजधानी रही। राजमहल सहनकोट से मिला हुआ था। इस समय यह जीर्ण है। राजा की जायदाद जब्त कर ली गई।

सहजनवा का छोटा गांव गोरखपुर से १० मील पश्चिम की ओर है। यहां थाना, पड़ाव और गोरखपुर से गोंडा और बस्ती को जानेवाली लाइन का स्टेशन है। वास्तव में स्टेशन लुजुई गांव में है जहां डाकखाना है। यहां सप्ताह में एक बार बाजार लगता है। पड़ोस में गेहूँ बहुत होता है।

मझौली और सलेमपुर वास्तव में दो कस्बे हैं और पास पास स्थित हैं। मझौली छोटी गंडक के बायें किनारे पर और सलेमपुर दाहिने किनारे पर स्थित है। यह गोरखपुर से ५३ मील दक्षिण पूर्व की ओर और देउरिया (तहसील) से १९ मील दूर है। मझौली से सलेमपुर १ मील पश्चिम की ओर गोरखपुर से छपरा को जानेवाली सड़क के पास है। दोनों एक पक्की सड़क से जुड़े हैं जो प्रधान लाइन के भाटपार स्टेशन को जाती है। दक्षिण की ओर यह सड़क सलेमपुर को गई है। सलेमपुर के पास ही भटनी से बनारस को जानेवाली लाइन का स्टेशन है। यहां से एक शाखा पश्चिम की ओर बरहज को जाती है।

कहते हैं विसेन राजवंश के पूर्वज मयूर ने मझौली को

बसाया था। उनका प्रथम निवास स्थान २ मील दक्षिण-पूर्व की ओर कुन्दिलपुर में था। उसके पश्चात् मयूर के वंशज मझौली में रहने लगे। आजकल राजा साहब नदी के ऊंचे किनारे पर ईंटों के बने हुये पक्के किले में रहते हैं। सलेमपुर के सम्बन्ध में कहा जाता है कि अकबर के कर्मचारी फिदई खां ने फतेहपुर सीकरी के प्रसिद्ध फकीर सलीम चिश्ती को यहां कुछ भूमि दान में दी थी। इस भूमिपर जो नगर बस गया उसका नाम फकीर के सम्मानार्थ सलेमपुर रक्खा गया। कुछ लोगों का अनुमान है कि राजा बोधमल ने अपना नाम बदलकर इस्लाम खां या सलीम खां रख लिया था और यहीं रहने लगे थे। इसलिये इसका यह नाम पड़ गया। नगर और नदी के बीच में उसका मकबरा बना है। आजकल मझौली और सलेमपुर वास्तव में एक कस्बा बन गये हैं। मझौली में हिन्दू और सलेमपुर में मुसलमान रहते हैं। सलेमपुर में थाना और डाकघर और प्राइमरी स्कूल है। मझौली में हाई स्कूल, मिडिल स्कूल, डाक तारघर और लड़कियों का स्कूल है।

सेमरा गांव फरेंदा रेलवे स्टेशन से ६ मील उत्तर-पूर्व की ओर गोरखपुर से ३६ मील दूर है। ब्रिजमनगंज से निचलौल को जाने वाली सड़क इसके उत्तर में है। फरेन्दा से महराजगंज को जाने वाली सड़क इसके दक्षिण में है। यह वन के पास रोहन के किनारे स्थित है।। यहां थाना और डाकखाना है। इस छोटे गांव में अधिकतर अहीर रहते हैं।

सिस्वा बाजार केप्टेनगंज से निचलौल को जाने वाली

सड़क पर महराजगंज से ११ मील पश्चिम की ओर और गोरखपुर से ४३ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। गांव के दक्षिण में गोरखपुर से बगहा को जाने वाली रेलवे लाइन सड़क को पार करती है। स्टेशन पूर्व की ओर है। पहले नैपाल का चावल सड़क पर निचलौल से गोरखपुर और चौरी चौरा को जाता था। अब यह सीधे सिस्वा रेलवे स्टेशन को आता है रेल से सिस्वा का व्यापारिक महत्व बढ़ गया है। निचलौल से सिस्वा केवल १२ मील दूर है। मारवाड़ी और अनाज के दूसरे व्यापारी यहां आकर बस गये हैं।

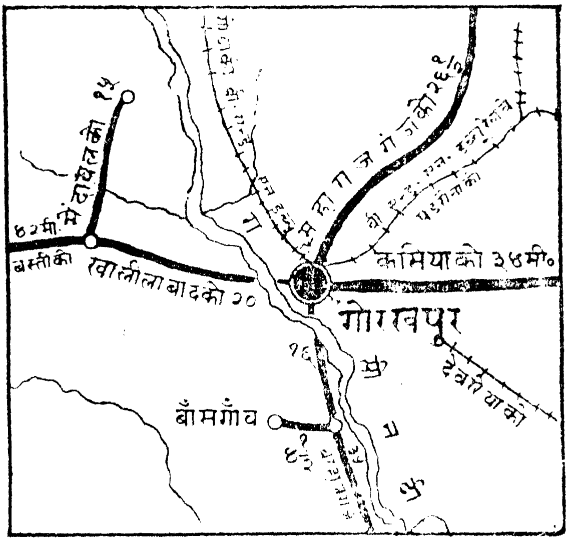
सोहनाग का छोटा गांव प्राचीन भग्नावशेषों के लिये प्रसिद्ध है। यह सलेमपुर से ३ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। सलेमपुर से भागलपुर को जाने वाली सड़क से १ मील पश्चिम की ओर है। यहां का प्राचीन ताल १८ एकड़ है। यहां बौद्धकाल के कई भग्नावशेष फैले हुये हैं। ताल के पश्चिम में किनारे पर एक ४० फुट ऊंचा और १०० फुट चौड़ा टीला है। यह ऊंची भूमि में स्तूप और निचले भाग में बिहार जान पड़ता है। इसकी चोटी पर परसराम का छोटा मन्दिर है। इसके बाहर महा रुद्र नाथ शिव का मन्दिर है। पड़ोस में और कई मन्दिर हैं। इनकी मूर्तियां बौद्ध कालीन हैं। कहते हैं पहले यह नागपुर कहलाता था। यहां परसराम ने तपस्या की थी। मन्दिर बहुत पहले टूट फूट गये थे। नैपाल नरेश सोहन ने उनका जीर्णोद्धार किया। वह कुछ रोग की औषधि के लिये काशी जा रहे थे। लेकिन इस ताल में स्नान करने से उनका कोढ़ अच्छा हो गया। तभी से इनका नाम

सोहनाग पड़ गया। कुछ लोगों का कहना है कि सोहन बिसेन राजपूत था। मझौली के बिसेन लोगों का इन मन्दिरों से घनिष्ट सम्बन्ध है। बैसाख मास में यहां बड़ा मेला लगता है। इसके पास ही रामानन्दियों का मठ है। यह मठ धर्मादास ने स्थापित किया था। प्रसिद्ध साधू जीवा राम जी उनके उत्तराधिकारी हुये। जीवा राम जी एक कूंडी छोड़कर बाहर चले गये। जाते समय वह कह गये थे कि जिस दिन मैं मरूंगा उसी दिन यह कूंड़ी टूट जायगी। बारह वर्ष बाद कूंड़ी टूट गई। पर वे कहां मरे इसका पता न लग सका। जीवा राम जी की समाधि पर कूंड़ी का एक टुकड़ा रक्खा हुआ है। इसे यात्री लोग बड़ी श्रद्धा से देखते हैं।

तमकुही कसिया से छपरा को जानेवाली सड़क पर गोरखपुर से ५५ मील पूर्व की ओर है। यह पडरौना (तहसील) से २२ मील दूर है। एक सड़क पश्चिम की ओर काज़ीपुर को जाती है। यहां तार-डाकघर प्राइमरी स्कूल और पड़ाव है। यहीं तमकुही के राजा की राजधानी और उनकी कोठी है। यहां से ३ मील उत्तर की ओर बभनौली में नील की बड़ी कोठी है।

तरिया सुजान का बड़ा गांव तमकुही से ६ मील दक्षिण-पूर्व में और बड़ी गंडक से पांच मील पश्चिम की ओर स्थित है। यह सड़क से कुछ दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो वार बाज़ार लगता है।

तरकुलवा देउरिया से कसिया को जाने वाली सड़क के पश्चिम में देउरिया से १२ मील और गोरखपुर से ४० मील


गोरखपुर
कमिया को ३४मी०
बस्ती को
खलीलाबाद को २०
बाँसगाँव
देवरिया को

'भूगोल' का स्थायी साहित्य

१—भारतवर्ष का भूगोल २।)
२—भूतत्व १॥)
३—भूगोल एटलस १॥)
४—भारतवर्ष की खनिजात्मक सम्पत्ति १)
५—मिडिल भूगोल भाग १–४ मूल्य प्रत्येक भाग ।॥)
६—हमारा देश ॥=)
७—संक्षिप्त बालसंसार (नया संस्करण) १।)
८—हमारी दुनिया ॥)
९—देश निर्माता ॥)
१०—सीधी पढ़ाई पहला भाग ।)
११—सीधी पढ़ाई दूसरा भाग ।)
१२—जातियों का कोष ॥)
१३—अनोखी दुनिया ।॥)
१४—आधुनिक इतिहास एटलस १)
१५—संसार-शासन २।)
१६—इतिहास-चित्रावली (नया संस्करण) १।)
१७—स्पेन-अंक १)
१८—ईरान-अंक १)
१९—चीन-अंक १)
२०—चीन-एटलस ॥)
२१—टर्की १)
२२—अफ़ग़ानिस्तान १)
२३—भुवनकोष १)
२४—एबीसीनिया ।॥)
२५—गंगा-अंक १)
२६—गंगा-एटलस ॥)
२७—देशी राज्य-अंक २॥)
२८—पशु-पक्षी-अंक १)
२९—महासमर-अंक १।)
३०—महासमर एटलस ॥)
३१—सचित्र भौगोलिक कहानियाँ ॥)
३२—पशु-परिचय ॥)
३३—प्राचीन जीवन ॥)
३४—भूपरिचय (संसार का विस्तृत वर्णन) ३)
३५—मेरी पोथी ॥=)
३६—आसाम-अंक १)
३७—द्वितीय महासमर-परिचय १॥)
३८—संयुक्त प्रांत-अंक ३॥)
३९—महासमर दैनन्दिनी डायरी २)
४०—भारतीय भाषाएँ १)
४१—नागरिक दर्शन ॥=)
४२—मेरी पोथी ॥=)

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय कक्करहाघाट इलाहाबाद ।

पूर्व-दक्षिण की ओर है। छोटी गंडक यहां से १ मील दूर है। रेतीले टीले पर बसा होने के कारण यह पड़ोस के भाट प्रदेश से अधिक स्वास्थ्यकर है। यहां थाना और डाकखाना है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

थूथीबारी जिले के धुर उत्तरी सिरे पर नेपाल की सीमा के पास पियास नदी के किनारे पर स्थित है। यह गोरखपुर से ६० मील और महाराज गंज (तहसील) से २५ मील दूर है। यहां के व्यापारी नेपाल से व्यापार करते हैं। प्रति सप्ताह बाजार लगता है। यहां थाना और डाकखाना है। इसके सामने नेपाल राज्य में इसी की टक्कर का अमिनीगंज गांव है। थूथीबारी में नेपाल के कैदी नेपाल को भेज दिये जाते हैं जो हिन्दुस्तानी कैदी नेपाल में होते हैं वे यहां भेज दिये जाते हैं। इस प्रकार यह नेपाल और हिन्दुस्तान के कैदियों का परिपर्वतन स्थान है। उनौला या अनौला गोरखपुर और रुद्रपुर से सिकरी गंज को जाने वाली सड़क से कुछ दूर पश्चिम की ओर है। यह बांस गांव (तहसील) से ७ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। उनौला के राजा उनवल में रहते हैं।